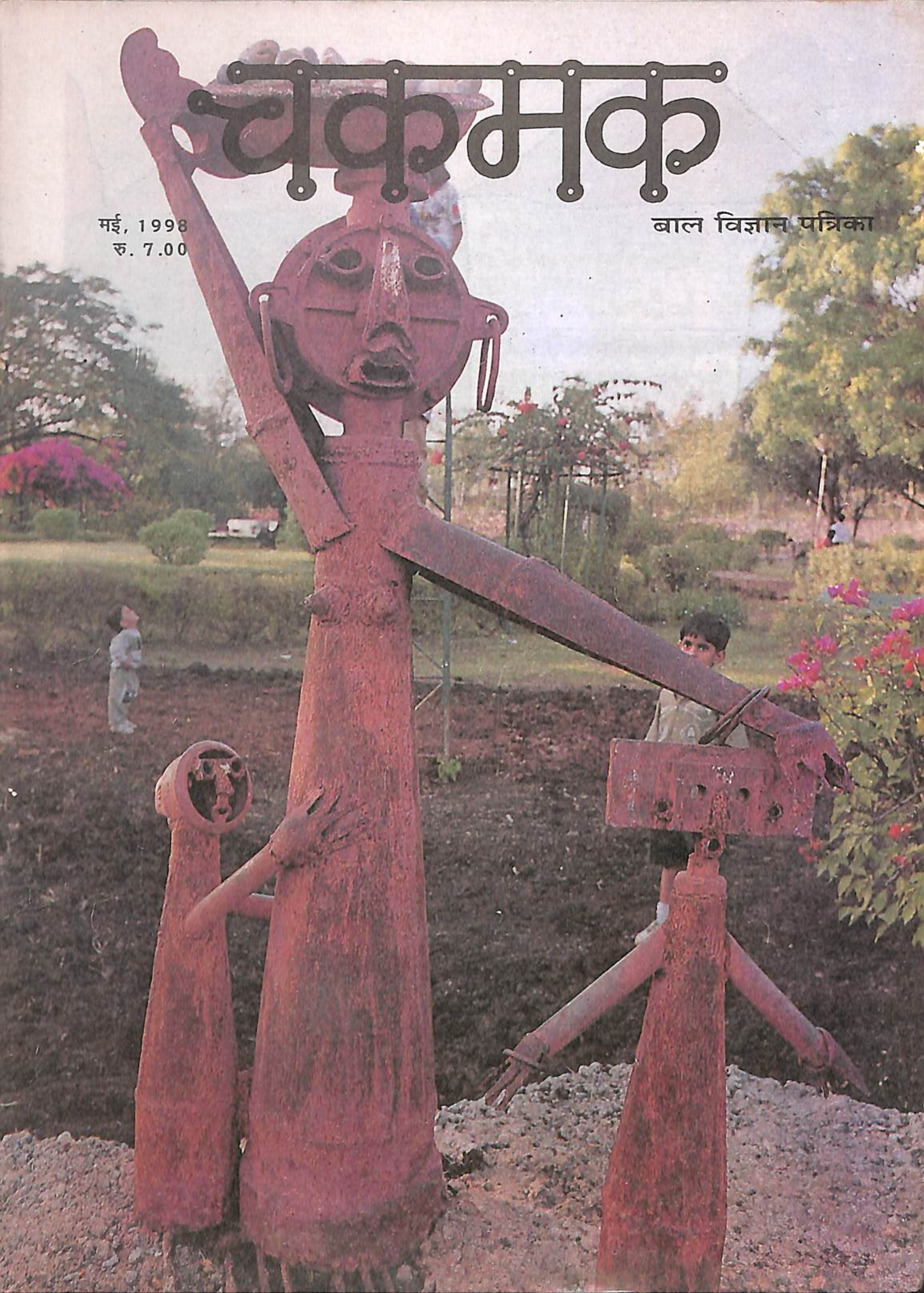
चकमक

मई, 1998
रु. 7.00

बाल विज्ञान पत्रिका





विकास चौधरी, बारह वर्ष, झुंझुनू, राजस्थान



अमोल नागवंशी, तीसरी, बिरसा, बालाघाट, म.प्र.

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष -13 अंक-11 मई, 1998
सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी
वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

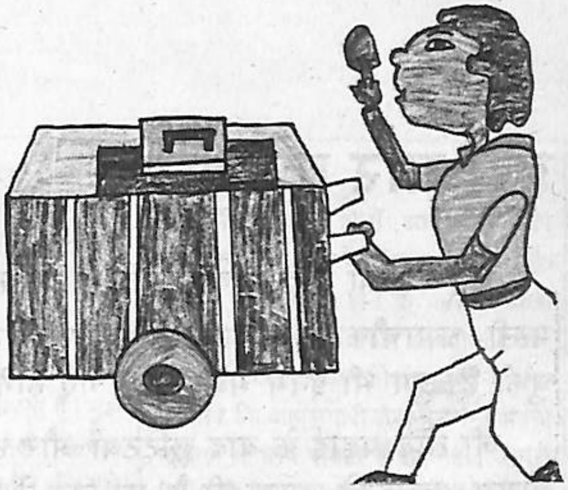
चकमक का चंदा

एक प्रति	सात रुपए
छमाही	40.00 रुपए
वार्षिक	75.00 रुपए
दो साल	140.00 रुपए
तीन साल	200.00 रुपए
आजीवन	750.00 रुपए

साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।
आजीवन : 1000.00 रुपए
साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।
सभी में डाक खर्च हमारा
चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कवर का कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई -1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380



प्रियंका सरदाना, चौथी, पंचकूला, हरियाणा

153 वें अंक में ...

विशेष

कविताएँ

कहानियाँ

धारावाहिक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण तथा 'कबाड़ से कला' के सभी फोटो : सुरेश स्वप्निल

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

स्कूल की छुट्टियाँ और गर्मियों की शरारतें, खेलकूद, मौज-मस्ती, धमाचौकड़ी, सैर-सपाटे और भी जाने क्या-क्या शुरू हो चुकी हैं। तुम भी इनमें मशगूल हो गए होगे।

जी तोड़ पढ़ाई के बाद छुट्टियाँ और ठण्ड के बाद गर्मी का मौसम अच्छा तो लगता ही है। पर जब तेज़ धूप पड़ने लगती है, लू चलने लगती है, तो कभी-कभी यह भी लगता है कि गर्मी का मौसम जल्दी बीत जाए तो ही अच्छा है। लेकिन यह भी है कि गर्मी के बीतते-बीतते छुट्टियाँ भी फुर्र हो जाएँगी। तो क्यों न गर्मी से बचने के कुछ उपाय किए जाएँ और फिर छुट्टियों का भरपूर मज़ा लिया जाए।

तेज़ धूप से हमारे शरीर की त्वचा और आँखों को नुकसान पहुँचता है। और कभी-कभी शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गड़बड़ाने से संक्रामक रोग लगने की सम्भावना बन जाती है। तेज़ धूप से बचने का पहला सुझाव यही है कि तेज़ धूप में बाहर मत निकलो। खासकर ग्यारह से तीन बजे के बीच में। और बिना निकले काम नहीं चले तो फिर कसी बुनाई वाले कपड़े पहनकर निकलो। शरीर के सभी हिस्से ढँके हों। खास तौर पर सिर। सिर पर टोप, साफा, गमछा कुछ न कुछ ज़रूर बांध लो।

तेज़ धूप से आँखों को बचाना भी ज़रूरी है। ऐसे उपाय करो कि तेज़ धूप आँखों पर नहीं पड़े। काले रंगीन चश्में आँखों की रक्षा करते हैं। पर उनका काँच अगर अच्छा नहीं हो तो नुकसान भी पहुँच सकता है। इसलिए चश्मा पहनते समय इस बात का ध्यान रखो। वैसे आगे की तरफ निकले हुड वाली टोपी से भी धूप को सीधे आँख पर पड़ने से रोका जा सकता है।

गर्मियों में पसीना भी बहुत ही निकलता है। अधिक पसीना निकलने पर शरीर में पानी की कमी हो सकती है। इसलिए खूब पानी पियो। ज्यादा पानी पीना कभी भी सेहत के लिए बुरा नहीं होता। पानी की कमी से ज़रूर कई परेशानियाँ खड़ी हो सकती हैं।

अब बाकी तो तुम खुद समझदार हो। थोड़े लिखे को बहुत समझना और तेज गर्मी, धूप, पसीने के बावजूद और सारी मनाही और रोक–टोक की हदें पार करके क्या मज़े किए, हमें भी बताना।



कमलेश कुमार रैकवार, दरगुवाँ, बिजावर, छतरपुर, म. प्र.

नमस्ते,

आपकी चकमक पत्रिका बहुत अच्छी लगी। यह पहली बार हमारे घर आई है। मैंने इसमें अनेक कविता, कहानी और रोमांचक बातें पढ़ीं। मैं आपकी पत्रिका आगे भी पढ़ना चाहती हूँ। लेकिन यह हमारे ज़िले में नहीं आती है। इसी कारण मैं निराश हो जाती हूँ और इतनी सुन्दर पत्रिका पढ़ नहीं पाती। मैं भी चकमक की दोस्त बनना चाहती हूँ और कविता, कहानी तथा अनेक चित्र भेजना चाहती हूँ। लेकिन इसमें ठीक से पता नहीं लिखा है। अगर यह पत्र पहुँच जाए तो आप मेरे पत्र का जवाब ज़रूर दें। चाहे आप मेरी कविता न छापें।

इसमें पहेली और चुटकुले नहीं है। मैं पहेली और चुटकुले भेजना चाहती हूँ। और कविता छपने की उम्मीद भी करती हूँ क्योंकि मेरी यह कविता उतनी बुरी नहीं है।

गुलशाना उस्मानी, आठवीं,
नरसिंहपुर, म. प्र.

ooo

चकमक से शिकायत

मैं चकमक का पाठक हूँ तथा एक लेखक भी हूँ। मेरी कहानी 'आम का पौधा' और 'कुत्ता पालने के लिए' छप चुकी हैं। दोनों कहानियों में मेरे नाम गलत छपे हैं। आम का पौधा कहानी में चकमक के पहले पन्ने पर गलत नाम लिखा है परन्तु अन्दर ठीक नाम लिखा है।

और इस बार अंक "मार्च 1998" में मेरा नाम फिर गलत लिखा है। मेरा नाम नकुल कुन्दरा है। परन्तु हर बार मेरा नाम नकुल कुन्देरा छापते हैं। मैं आपको अपनी कई और भी कहानियाँ भेज रहा हूँ। कृपया आप इनमें मेरा नाम सही छापिए और मुझे शिकायत का मौका न दें।

आपका अपना

नकुल कुन्दरा, जालंधर, पंजाब

ooo

पाठक लिखते हैं

मैं आपकी 'चकमक' मासिक बाल विज्ञान पत्रिका का पाठक हूँ। मैं आपकी चकमक पत्रिका को पसन्द करता हूँ। मुझे चकमक में माथापच्ची, वर्ग पहेली, किस्सा बुरातीनो का बहुत अच्छे लगते हैं। और मुझे पहेलियाँ अच्छी लगती हैं।

मुझे आपसे एक शिकायत है। मैं कई रचना आपके पास भेज चुका हूँ पर रचना एक भी न छपी। इसका क्या कारण है, आप ज़रूर लिखना।

आपका छोटा भाई,
नीरज खरे, दतिया, म. प्र.

नमस्ते,

मैंने पिछले दिनों आपकी पत्रिका चकमक देखी। मुझे यह बहुत अच्छी लगी। लेकिन मैं जल्दी में होने के कारण अच्छी तरह पढ़ नहीं सका। केवल पता ही नोट कर पाया। मैंने यह पत्र आपको यह पूछने के लिए लिखा है कि आप हमारी लेख व रचना अपनी पत्रिका में छाप सकते हैं या नहीं। आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे यह जल्द से जल्द बताएँ।

मो. तारीफ, नगीना, गुड़गाँव, हरियाणा

आपका और चकमक के सभी पाठकों का स्वागत है कि वे अपनी कविता, कहानियाँ, रचनाएँ भेजें। रचनाएँ चुनी जाने पर ही प्रकाशित होंगी। सं

5-4-98

मेरी प्यारी चकमक

तुम्हें जानकर अच्छा लगेगा कि मेरे चित्रों की प्रदर्शनी यहाँ 16 ता. को शुरू हो रही है तुम और चकमक पढ़ने वाले मेरे साथी उसमें जरूर आना। मैं 6½ वर्ष की हूँ और दूसरी कक्षा में जाऊँगी। मैंने यहाँ के अखबार MID DAY के विशेष अंक के कवर पर चित्र बनाया है। मुझे 'रुसी और पूसी' कहानी बहुत अच्छी लगी क्योंकि रुसी को भी चित्र बनाने अच्छे लगते हैं।

प्यार के साथ
सलोनी सक्सेना
मुम्बई

फालसेवाला



हितेश स्वर्णकार, दूसरी, जगदलपुर, म.प्र.

फालसे ले लो.... फालसे वाला गलियों में घूमता चिल्लाता था। मई के महीने के दिन जब धरती को तपाकर चिंगारियों में ढालते थे। उस समय वो फालसे बेचता था। लगभग सभी लोग गर्मी के कारण अपने घरों तक ही सीमित थे। पूरे ज़ोरों पर गर्मी उसका पसीना निचोड़ लेती थी तो लू सहानुभूति-सी जताती उसका पसीना सुखाते हुए निकल जाती थी। पर इन दोनों के बीच वो पिसता था। सर पर तमतमाते हुए सूरज की तेज़ धूप से बचने के लिए उसके पास छतरी भी न थी।

हर रोज़ वो नुक्कड़ पर खड़ा किसी गली के अन्दर जाने की सोचता और एक गली के अन्दर चल पड़ता। चारों ओर धूल के गुबार उठते रहते थे और उसे धूल में ढककर चले जाते थे। पसीने से लथपथ उसके कुर्ते पर धूल का रंग भी चढ़ जाता। गर्म हवा का जो झोंका आता उसे झुलसा कर चला जाता।

'फालसे ले लो'.. उसकी आवाज़ दीवारों से टकराती और हवा हो जाती। गलियों के सन्नाटे को देखकर उसका मन कदम पलटने को करता पर कुछ पैसे कमाने की इच्छा उसे वहीं रोक देती। ''ओ भैया फालसे .. पानी पियोगे।''

''आपका भगवान भला करे।'' उसने पानी पिया और पूछा, ''फालसे दूँ।''

''आज नहीं, आप कल आना, आज मेरे पास पैसे नहीं हैं।'' मैं कोई बहाना करके उसे टाल देता। रोक न थी पर किसी संकोचवश उससे फालसे न ले पाता था।

''एक दिन में कितना कमा लेते हो?'' मैंने फालसे वाले से पूछा।

'' काहे की कमाई? घर का ख़र्चा चलाना भी तो मुश्किल है, और वैसे हो जाती है बीस-पच्चीस की।'' उसने नम्र आवाज़ में कहा और आगे चल दिया।

हर रोज़ संकल्प कर लेने के बावजूद मैं उसकी सहायता करने में सकुचाता था। मम्मी ने मुझे पैसे देकर फालसेवाले से फालसे लाने को कहा। मैंने उत्साह के साथ उसे रोका पर वो काफी दूर जा चुका था। मुझे अगले दिन का इन्तज़ार था।

हर रोज़ की तरह मैं उसका इन्तज़ार कर रहा था। उसको आते देख मुझे काफी खुशी थी पर उस दिन वो बिना कुछ सोचे दूसरी गली में मुड़ गया। शायद उसे मेरी गली के लोग रास न आए थे। शायद दूसरी गली के लोग उसको पसन्द आए हों।

विवेक कुलश्रेष्ठ, ग्यारहवीं, ग्वालियर, म.प्र.



छुट्टी

छुट्टी आई छुट्टी आई
बच्चों के मन को भायी
बस्ते ने देखा अपना खूँटा
कोई सोया ओढ़े चादर
कोई करता है चित्रकारी
मुन्नी-मुन्ना खेले मिलकर
गुल्ली-डंडा और खेल कबड्डी
मुन्नू भी तो मौज मनाते
गाते है फिल्मों के गाने
टी. वी. का तो हाल बुरा है।
इसको तो दिन भर चलाते
छुट्टी आई छुट्टी आई।

गुलशाना उस्मानी, आठवीं,
तलापार, नरसिंहपुर, म. प्र.

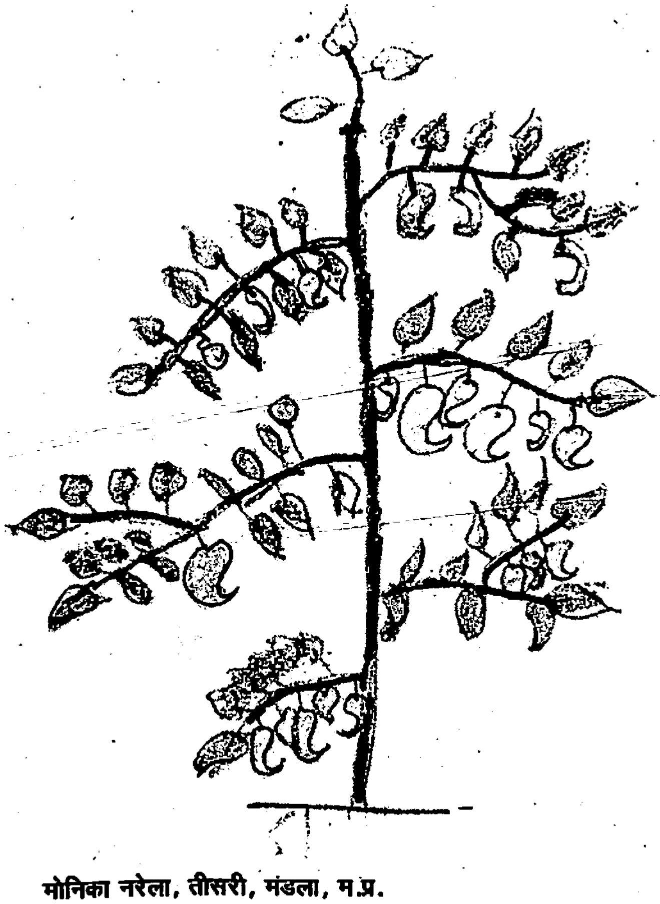


प्रशांत भटेवरा, दूसरी, भाऊगढ़, मंदसौर, म.प्र.

कोयल

कोयल जब अपना मुँह खोले
कूँ कूँ कूँ कूँ करके बोले
सुन्दर सुन्दर गीत सुनाए
अपने सुर से सबको लुभाए
सुबह उठकर यह जल्दी
सबको ही जगाती है
फिर सबरे में घूमकर
अपना भोजन लाती है
भोजन लाकर बच्चों
को अपने खिलाती है
उनके संग में बैठकर
खुद भी भोजन खाती है
कोयल खुले गगन में डोले
अपने सुर से सबको मोह ले
कोयल जब अपना मुँह खोले
कूँ कूँ कूँ कूँ करके बोले

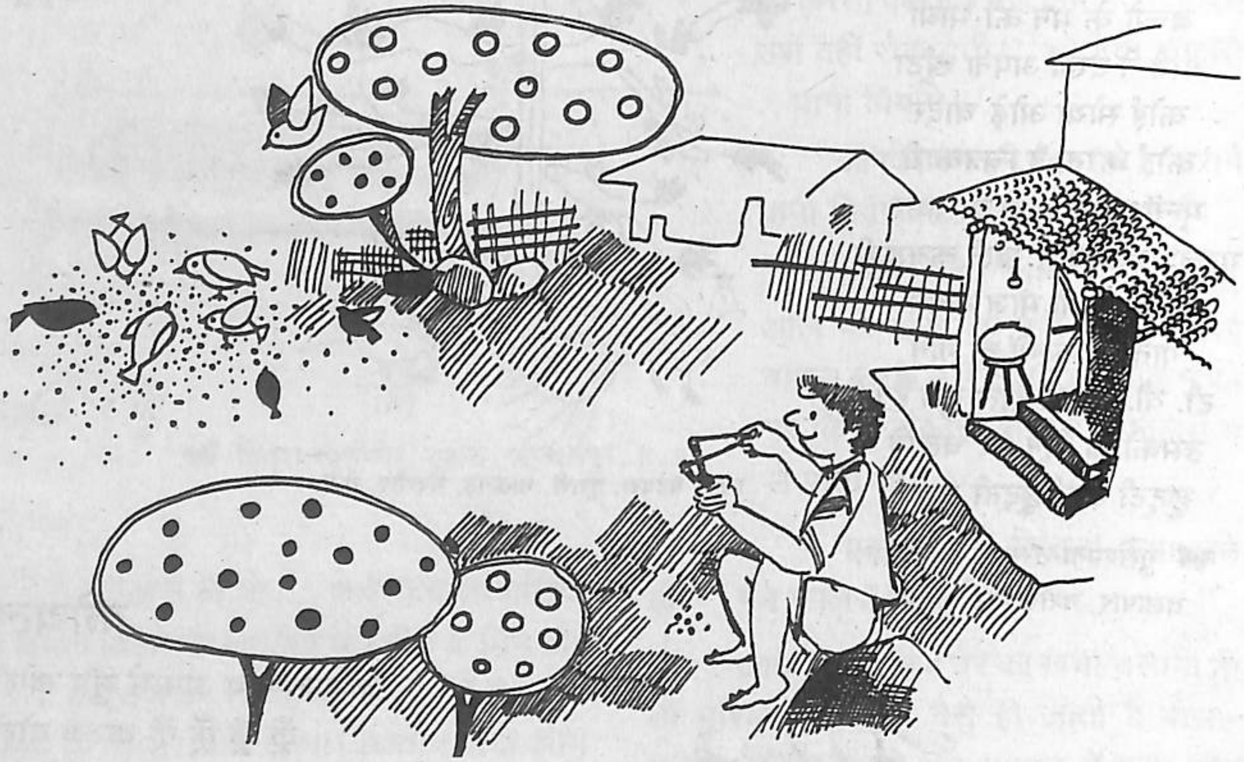
प्रदीप पंकज, पाँचवीं, लखनऊ, उ. प्र.



मोनिका नरेला, तीसरी, मंडला, म.प्र.

छुटकू की गुलेल

❑ कमलेश चन्द्र जोशी



गर्मियों की लम्बी दोपहर थी। घर में अम्मा-बाबू, दीदी-भैया, सब सो रहे थे। छुटकू भी चुपचाप अधूरे मन से सोने का प्रयास कर रहा था। उसे नींद नहीं आ रही थी। वह कभी ऊपर चलते हुए पंखे को देखता, जो अपनी पूरी रफ्तार से चल रहा था, तो कभी उसका ध्यान बाहर शान्त चिलचिलाती धूप में पक्षियों की बहुत धीमी आवाज की तरफ जाता। बाहर आँगन में गेहूँ सूख रहे थे। आज सुबह अम्मा ने गेहूँ धोकर सुखने के लिए धूप में डाल रखे थे। शाम को वे इन्हें उठायेंगी और कल इन्हें बीनकर पिसवाने के लिए भेजेंगी।

छुटकू को काफी देर से नींद नहीं आ रही थी। अब उसे पानी पीने का मन कर रहा था। ठंडा पानी बाहर रसोई में घड़े के पास रखा हुआ था। छुटकू चुपचाप पानी पीने के लिए बाहर गया। चुपचाप, इसलिए कि कहीं उसके उठने से और लोगों की नींद न खुल जाए। वह बाहर आकर घड़े से पानी निकालकर गिलास से पी रहा था। एकाएक उसकी नजर गेहूँ के दाने चुग रही कुछ चिड़ियों पर पड़ी। चिड़ियाँ चहक रही थीं और दाने चुग रही थीं। उनका चहकना छुटकू को अच्छा लग रहा था। वह काफी देर उनको दाने चुगते हुए देखता रहा।

फिर एकाएक उसे अपनी गुलेल का ध्यान आया। उसने यह गुलेल कल ही बनाई थी। गुलेल का ध्यान आते ही उसने सोचा क्यों न गुलेल से चिड़ियों पर निशाना लगाया

जाए? बहुत मज़ा आयेगा। ऐसा सोचते हुए वह दबे पाँव बरामदे में गया। वहाँ की अलमारी में गुलेल और कुछ गिट्टियाँ भी रखी हुई थीं। गिट्टियाँ कुछ बड़ी थीं। छुटकू ने सोचा कि इतनी बड़ी गिट्टियों से वह इतनी नन्हीं चिड़ियों पर तो निशाना नहीं लगाएगा। वह चिड़ियों को मारना नहीं चाहता है। वह तो केवल निशाना लगाना चाह रहा है। इस ख्याल से उसने बड़ी गिट्टियाँ छोड़ दीं और आँगन में लगे अनार के पेड़ के नीचे छोटी गिट्टियों की तलाश करने लगा। कुछ देर बाद उसने कुछ छोटी-छोटी गिट्टियाँ ढूँढ लीं।

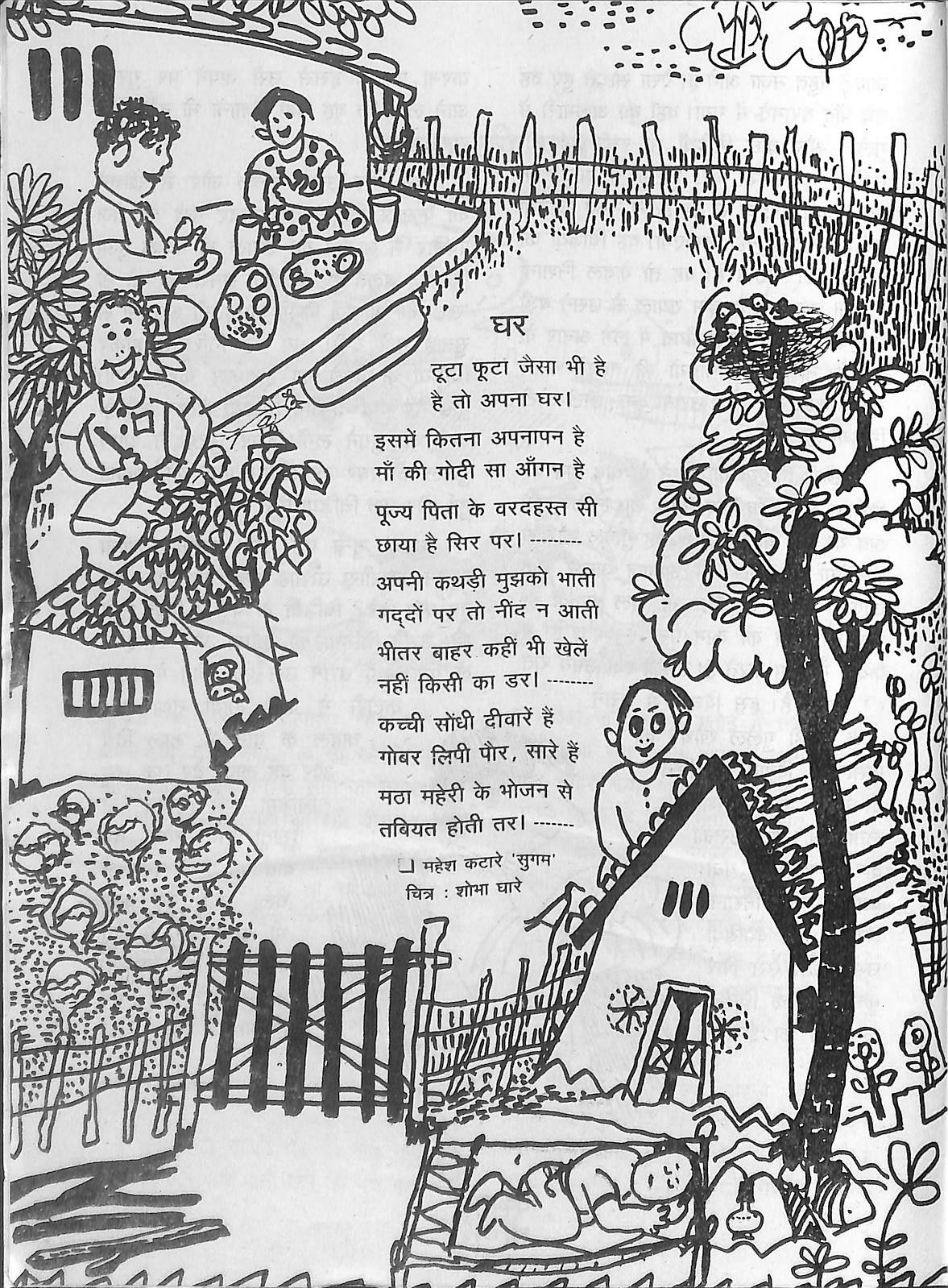
छोटी गिट्टियों को ढूँढने के बाद अब वह निशाना लगाने के लिए तैयार था। लेकिन उसे अब यह डर था कि अगर वह गुलेल जोर से चलायेगा तो 'खट' की आवाज़ अन्दर तक जाएगी। किसी की नींद भी खुल सकती है। बाबू को शाम को काम पर भी जाना है। वे फैक्ट्री में काम करते हैं। उनकी इस समय रात की शिफ्ट है। इस विचार से उसने के से ही गुलेल खींचने का फैसला किया। लेकिन दो-तीन बार निशाना लगाने के बाद उसका वार खाली गया। क्योंकि वह निशाना लगाता तो चिड़ियाँ उड़ जातीं। उसे फिर कुछ देर तक चिड़ियों के बैठने का इन्तज़ार करना पड़ता। इससे उसे अपने पर गुस्सा आने लगा कि वह सही निशाना भी नहीं लगा सकता?



इस बार उसने गुलेल ज़ोर से खींचने का फैसला किया और अन्दर पंखे की तेज़ रफ्तार से उसका यह ख्याल भी पक्का हुआ कि तेज़ चलते हुए पंखे की सनसनाहट से भी 'खट' की आवाज़ किसी को इतनी आसानी से सुनाई नहीं देगी। अब वह निश्चिन्त होकर चिड़ियों के बैठने का इन्तज़ार करने लगा। कुछ देर बाद दो-तीन चिड़ियाँ आकर गेहूँ के दानों को चुगने लगीं। इधर छुटकू ने अपने गुलेल की रबर को खींचा। 'फट' की आवाज़ हुई और एक चिड़िया गिर पड़ी।

छुटकू सुन्न पड़ गया। उसका निशाना लगाने का सारा उत्साह ठन्डा पड़ गया। अब वह क्या करे? चिड़िया के पैर में गिट्टी लगी थी। उसने चिड़िया को उठाया और रसोई में ले गया। वहाँ उसने उसे एक कोने में रखा। कटोरी में पानी लाया तथा कुछ चावल के दाने भी डाल दिये और वह काफी देर तक उस चिड़िया को ध्यान से देखता रहा। थोड़ी देर बाद वह अपने कमरे में चला गया। वह अभी भी अनमने ढंग से सोने का प्रयास कर रहा था। लेकिन उसे फिर नींद नहीं आ रही थी। ❑

सभी चित्र : धनंजय



घर

टूटा फूटा जैसा भी है
है तो अपना घर।

इसमें कितना अपनापन है
माँ की गोदी सा आँगन है
पूज्य पिता के वरदहस्त सी
छाया है सिर पर। ---------

अपनी कथड़ी मुझको भाती
गद्दों पर तो नींद न आती
भीतर बाहर कहीं भी खेलें
नहीं किसी का डर। -------

कच्ची सोंधी दीवारें हैं
गोबर लिपी पौर, सारे हैं
मठा महेरी के भोजन से
तबियत होती तर। -------

❑ महेश कटारे 'सुगम'
चित्र : शोभा घारे

कबाड़ से कला

बेकार हो गई चीज़ों से कुछ काम की चीज़ें बनाना या फिर उनसे सुन्दर कलाकृतियाँ बनाना अब कोई नई बात नहीं रह गई है। इन्दौर के गुरूजी विष्णु चिंचालकर का नाम सबसे पहले याद आता है। उन्होंने बेकार चप्पल, सड़ गई प्लाईवुड, नारियल की नरेली जैसी तमाम कबाड़ा चीज़ों को कलाकृति का रूप दिया है। चण्डीगढ़ का रॉक गार्डन (पत्थर के टुकड़ों से बना बगीचा) भी ऐसा ही एक उदाहरण है।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भी एक पार्क है जहाँ बेकार हो गए लोहे-लंगड़ और अन्य चीज़ों से हाथी, घोड़े, चिड़ियाँ, लोग, डायनासौर, ऊँट और तमाम चीज़ें बनाई गई हैं। प्रदेश का सचिवालय जिस अरेरा पहाड़ी पर बना है, उसी पहाड़ी की ढलान पर फैला है चिनार पार्क।

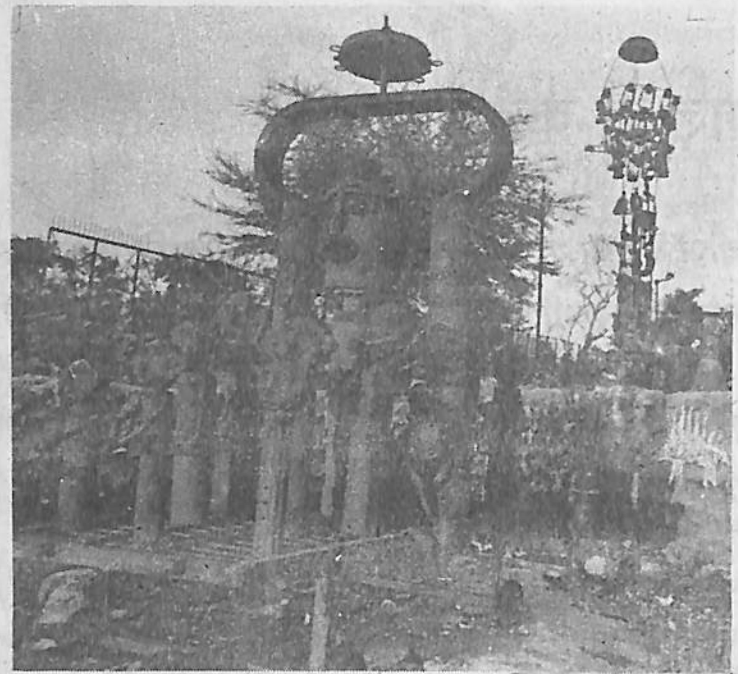


इस पार्क में पहले चिनार के पेड़ लगाए गए थे। लेकिन भोपाल की जलवायु में चिनार के पेड़ नहीं पनप सके। पर पार्क का नाम जरूर चिनार पार्क पड़ गया। अब यहाँ बोगेनवेलिया की झाड़ियाँ लगाई गई हैं। यहाँ इसकी लगभग 25 किस्में हैं। जब इन पर फूल खिलते हैं तब इस पार्क की रंगबिरंगी छटा देखने लायक होती है।

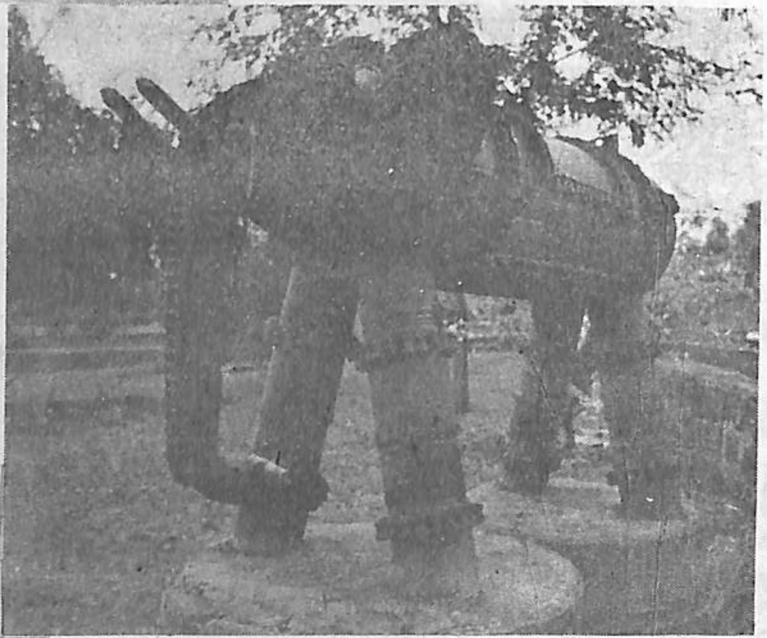
अब इसी पार्क को, कबाड़े से कलाकृतियाँ बनाकर शिल्प उद्यान का रूप दिया गया है। चिनार पार्क को शिल्प उद्यान बनाने में कई लोगों का योगदान है। लेकिन मुख्य रूप से श्री शरतचन्द्र बेहार (म. प्र. के पूर्व मुख्य सचिव) के प्रोत्साहन से श्री प्रवीण कुमार चौधरी (प्रशासनिक सेवा के अधिकारी) की कल्पनाओं को श्री कमलसिंग ने आकार दिया है।

पार्क में शिल्प बनाने में टूटे फूटे कप प्लेट, हैण्डपम्प, तसले, गेंती, फावड़ा, पुरानी लालटेन, गाड़ियों के पुराने बेकार हिस्से आदि का इस्तेमाल किया गया है। लगभग तीन सौ एकड़ में फैले इस उद्यान में डायनासोर, मगरमच्छ, परी, मोर, कुकरमुत्ता, पेड़ और भी बहुत कुछ आपका स्वागत करते लगते हैं। कहीं तारकोल के जंग खाए ड्रम से ढोलक बनाई गई है तो कहीं तसलों से बना ऊँट खड़ा है।

हम चाहें तो अपने घर, घर के आसपास, गाँव या फिर अपने कस्बे में ऐसे प्रयोग कर सकते हैं। चिनार पार्क की कुछ कलाकृतियों के फोटो तुम अगले पन्नों पर देखोगे।



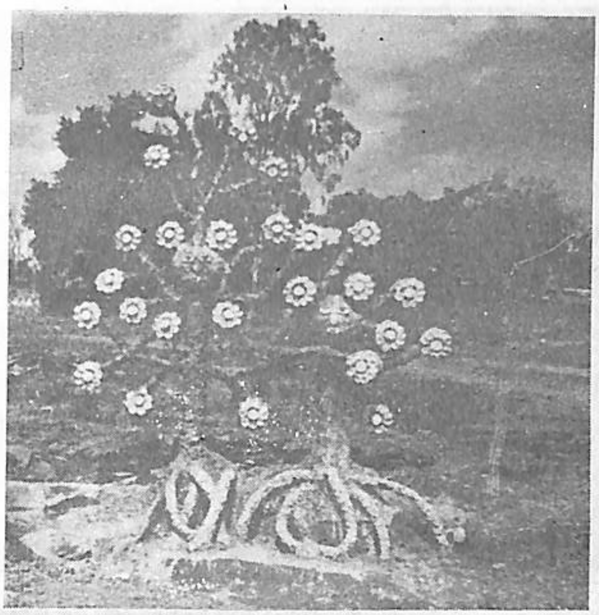
हम घूमने जा रहे हैं, आओ तुम भी हमारी गाड़ी पर बैठ जाओ।



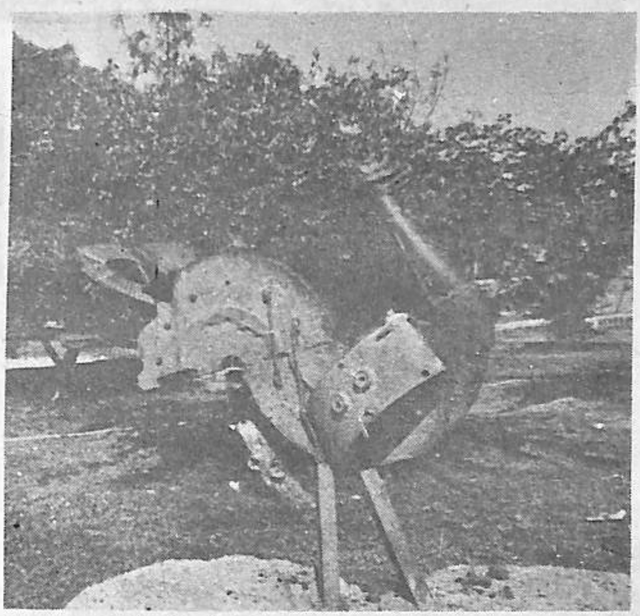
मैं हूँ हाथी,
है कोई मेरा साथी?



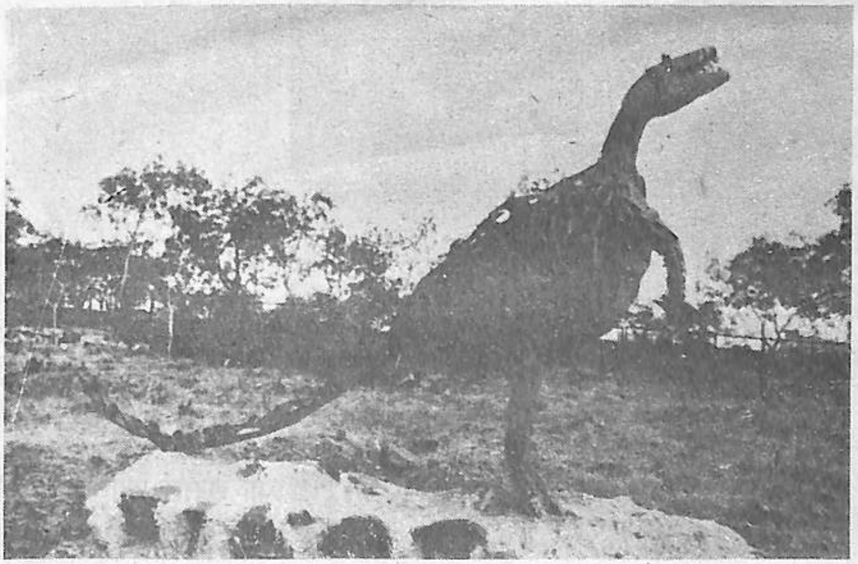
तीन सिर का घोड़ा।



चीनी मिट्टी के टुकड़ों से बना पेड़।



चिनार पार्क में मोर नाचा, सबने देखा।



ये डायनासौर महाशय बने हैं कुदाली और फावड़ों से।



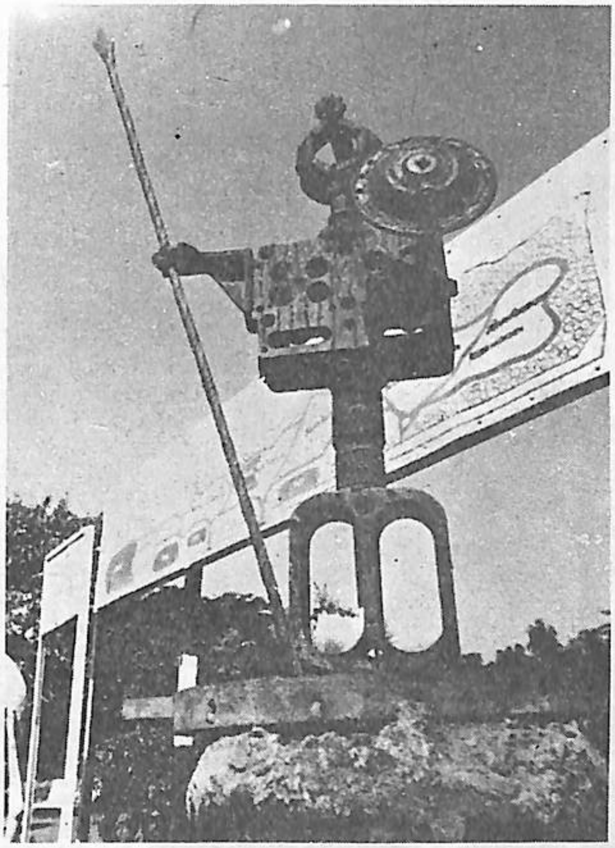
चिनार पार्क के हंस।

मैं परी हूँ। लौहनगर से आई हूँ।





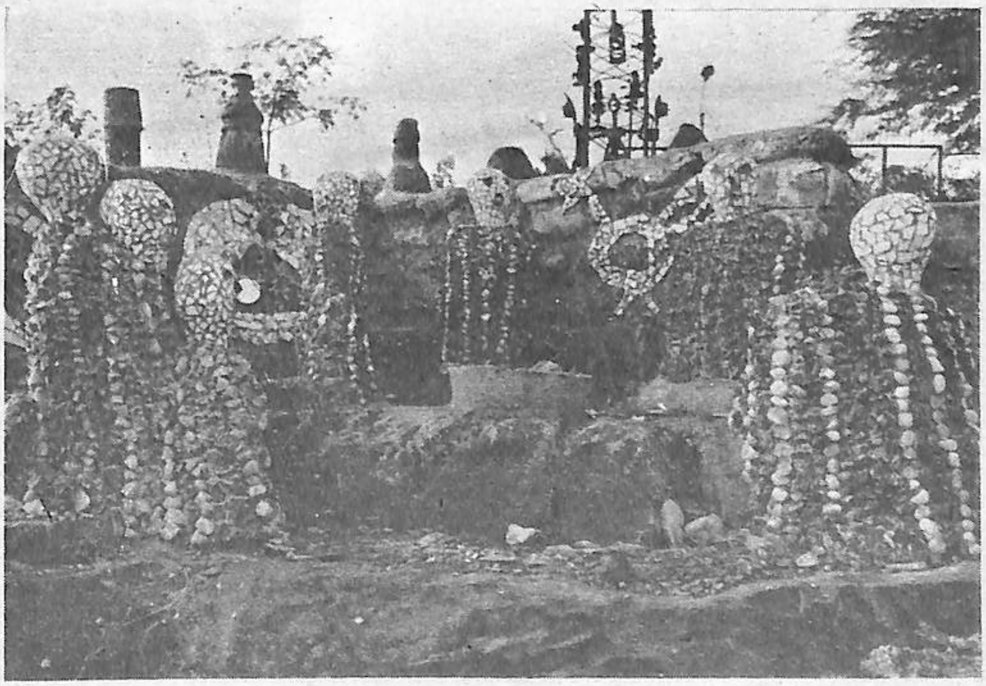
ये ऊँट जी तसले लादकर नहीं जा रहे, बल्कि तसलों से ही बने हैं।



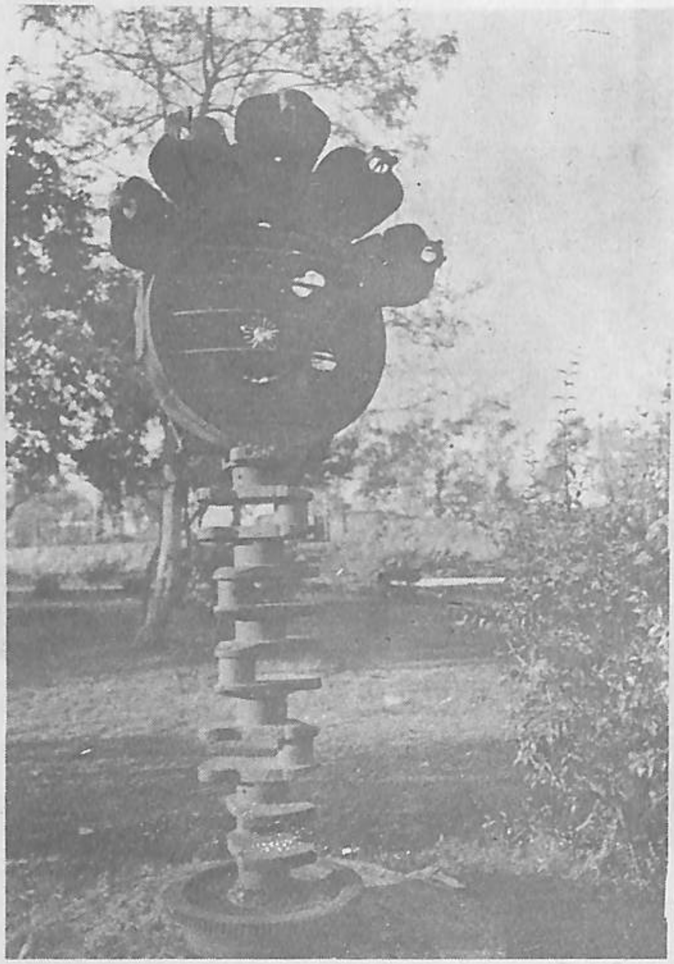
आप हैं चिनार पार्क के रखवाले।



हम सरकस के शेर।



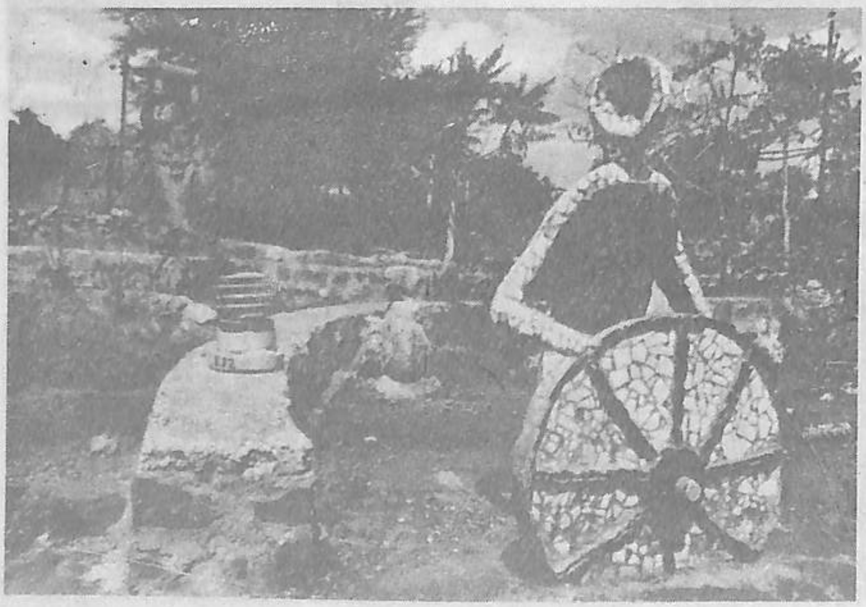
चीनी मिट्टी के लोग।
चौंक गए न! अरे भई ये
चीनी मिट्टी के बेकार
टुकड़ों से बने हैं।



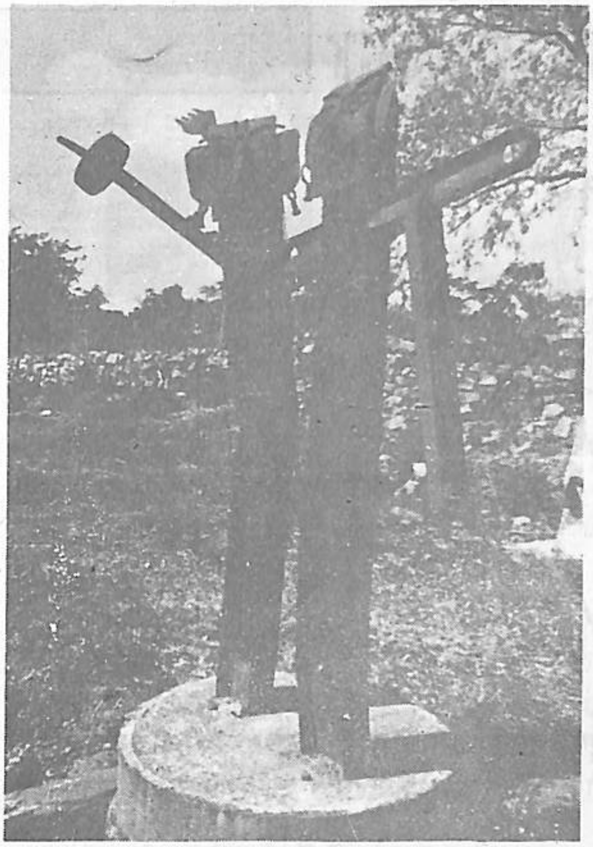
कबाड़े के शेषनाग



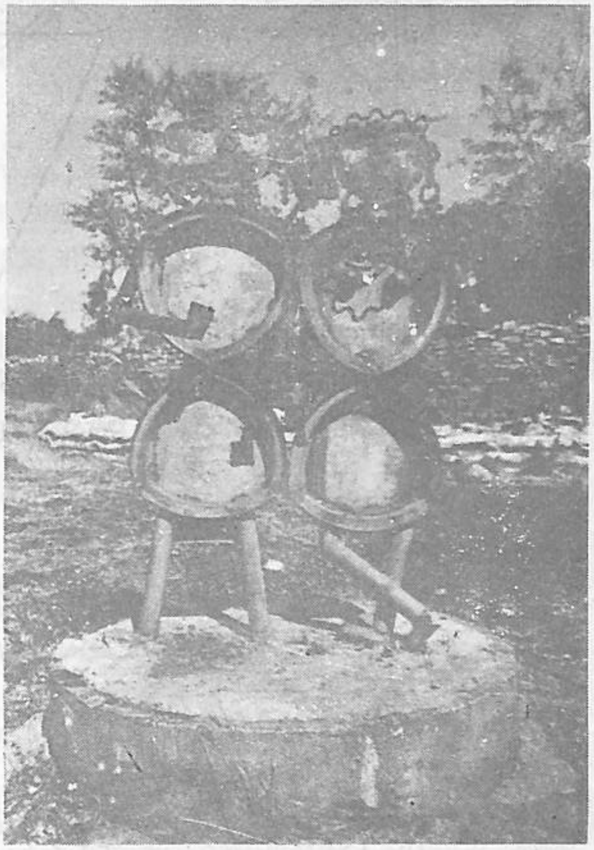
चल रे घोड़े टिक टिक।



आओ चका चलाएँ। चीनी मिट्टी के टुकड़ों से बना है यह और मैं भी।



हम दोनों की यारी बड़ी पुरानी।



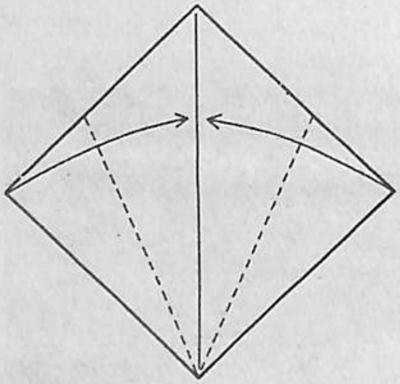
हम केवल दो ही हैं।



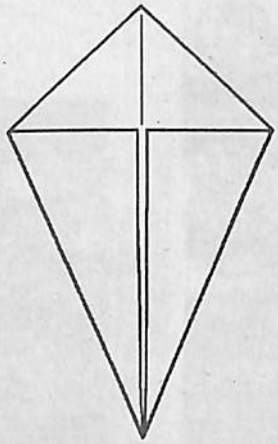
यह रही चिनार पार्क की संगीत मण्डली। इनके पास ढोलक, खड़ताल, सितार, वायलिन सब कुछ तो है।

खेल काग़ज़ का

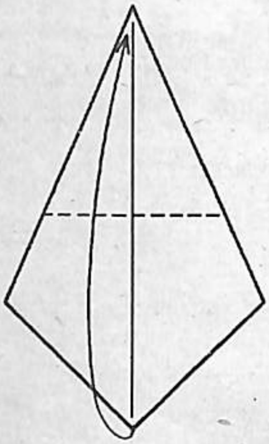
कबूतर



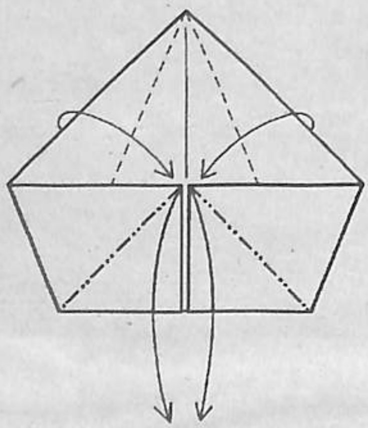
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



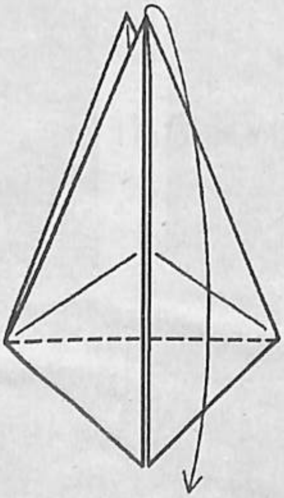
2. इस तरह की आकृति बनेगी। इसे पलटकर घुमा लो।



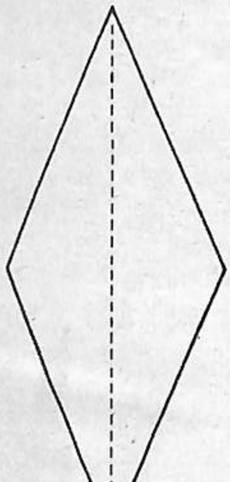
3. टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। यह मोड़ आकृति के बिल्कुल बीच से बनेगा।



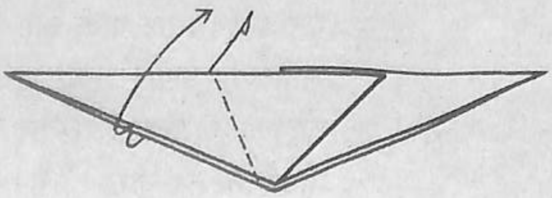
4. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। इसके लिए आकृति की ऊपरी परत को खोलकर नीचे की ओर लाते हुए मोड़ो।



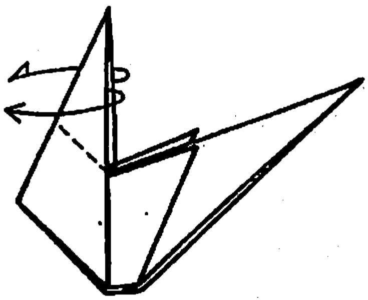
5. इस तरह की आकृति बनेगी। अब टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में ऊपरी परत को मोड़ो।



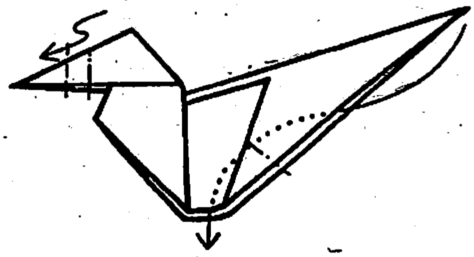
6. इस तरह। इसे बीच की टूटी रेखा पर से मोड़ लो।



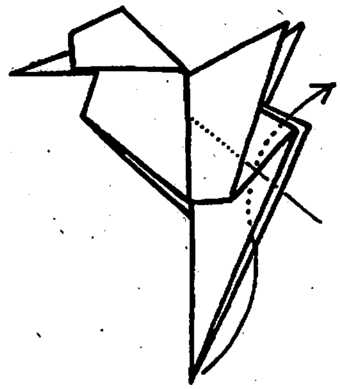
7. आकृति को घुमाकर इस स्थिति में कर लो। फिर टूटी रेखा पर से बाहर की तरफ उल्टा मोड़ बनाओ। उल्टा मोड़ जानते हो न, जिससे चिड़िया की चोंच बनती है।



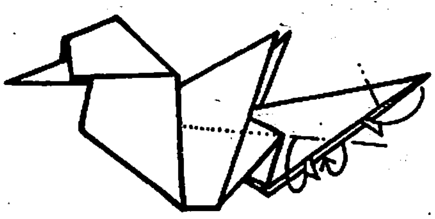
8. इस तरह की आकृति बन जाएगी। एक बार फिर टूटी रेखा पर तीर की दिशा में से उल्टा मोड़ बनाओ।



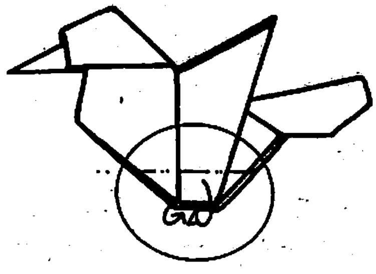
9. आगे चोंच वाले हिस्से को एक बार अन्दर की तरफ मोड़ो, फिर मोड़कर बाहर निकाल लो। इसी चित्र में पीछे पूँछ वाले हिस्से को उल्टा मोड़कर नीचे की तरफ लाओ।



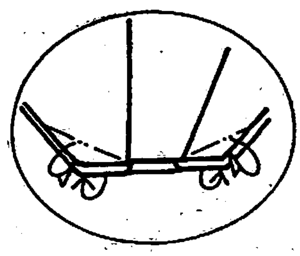
10. अब इस पूँछ वाले हिस्से को फिर अन्दर की तरफ उल्टा मोड़ते हुए ऊपर ले जाओ।



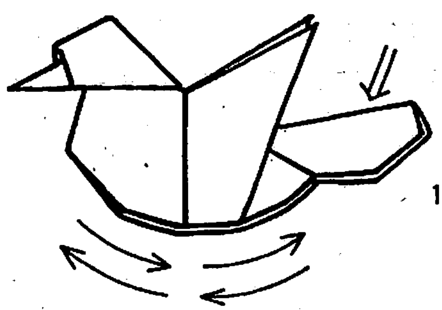
11. इस तरह की आकृति बन गई। आकृति में चिड़िया दिखाई देने लगी है न! तो अब पूँछ के एकदम आख़िरी किनारे को थोड़ा-सा अन्दर मोड़ दो। पूँछ के ही निचले हिस्से को जहाँ क और ख लिखा है, दोनों परतों को अलग अलग अन्दर की तरफ मोड़ दो।



12. अब तो चिड़िया लगभग तैयार है। चित्र में दिखाए अनुसार नीचे के हिस्से की दोनों परतों को अलग-अलग अन्दर की तरफ मोड़ दो।



13. नीचे से गोलाई लाने के लिए चाहो तो एक बार और किनारों को थोड़ा थोड़ा अन्दर की तरफ मोड़ लो।



14. यह चिड़िया तैयार है। कौन सी चिड़िया है यह? ऊपर तो हमने इसे कबूतर नाम दिया था पर कबूतर जैसा ही बना है या नहीं?



बेटी करे सवाल

किशोरावस्था, लड़कों और लड़कियों, दोनों के लिए ही एक खास उम्र होती है। इस समय वे कई सारे शारीरिक बदलावों से गुज़र रहे होते हैं। साथ ही सामाजिक स्थितियों और अपनी-अपनी अस्मिता की एक चेतना भी उनमें जागने लगती है। किशोरी बालिकाओं के लिए यह समय और अधिक महत्वपूर्ण और अक्सर कठिन भी हो जाता है, क्योंकि इस उम्र में उन्हें ज़्यादा ही रोक-टोक का सामना करना पड़ता है। सामाजिक मान्यताएँ, लड़की और लड़के में बरते जाने वाले भेदभाव इस समय ज़्यादा स्पष्ट रूप से उनके सामने आते हैं। और ऐसे में ढेरों सवाल उनके मन में कुलबुलाते हैं। कहाँ जाएँ वे इन सवालों को लेकर? किससे पूछें? शिक्षिकाओं से डर लगता है, माँ से संकोच होता है। ले देकर बचती हैं सहेलियाँ और खुसर-फुसर।

ऐसे तमाम सवालों को लेकर, बालिकाओं के साथ एक लम्बे अरसे से काम करते हुए उभरी है एक किताब - **बेटी करे सवाल**। एक ऐसी किताब जो न सिर्फ हर किशोरी बालिका को, बल्कि हर बच्ची के माँ-बाप को भी ज़रूर पढ़नी चाहिए। किशोर विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले हर शिक्षक की भी यह किताब एक अनिवार्य साथी होनी चाहिए।



इस किताब में हैं - किशोरी बालिकाओं के सवाल-जवाब, उनके जीवन की आशाओं, उम्मीदों और कठोर सच्चाइयों की बहसें, शारीरिक प्रक्रियाओं और बदलावों को समझने के लिए दिए गए ढेरों चित्र। इसके अलावा कुछ आम तकलीफों के लिए आसान उपचार के तरीके और सामाजिक परिस्थितियों की समझ बनाने के लिए कुछ अनुभव आधारित कहानियाँ। किताब में आए सभी तकनीकी नामों, पौधों के नामों आदि की सूचियाँ (index and glossary) भी।



76 पेज की इस किताब की कीमत है मात्र 25.00 रुपए।

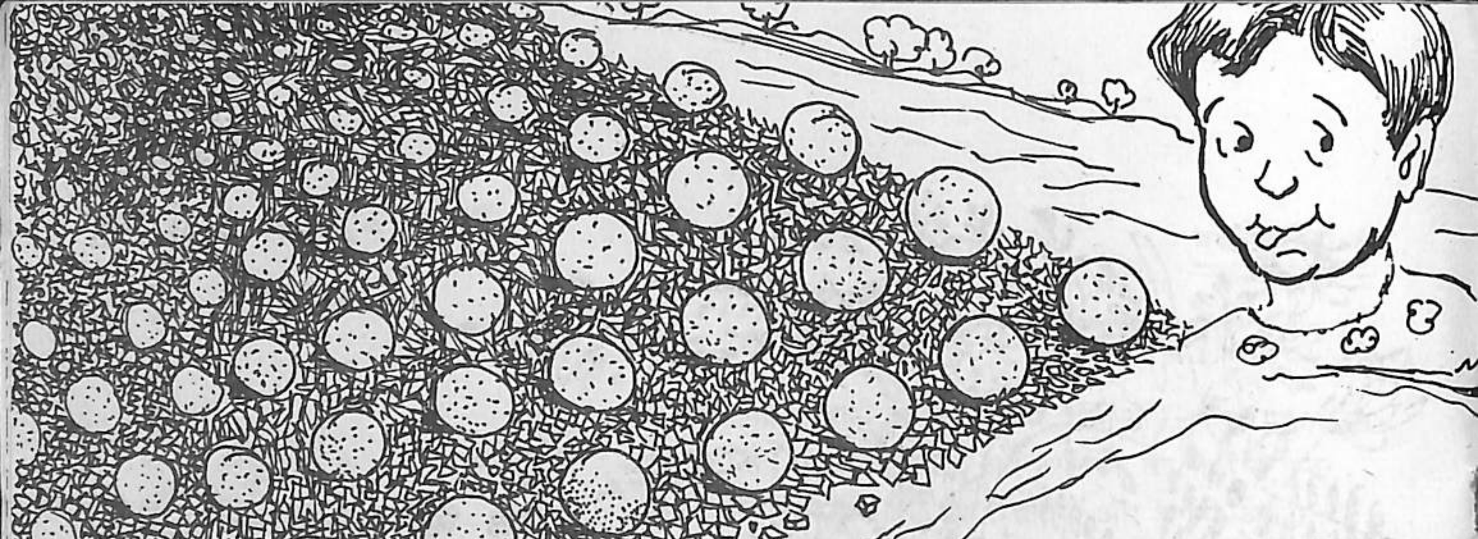
डाक से बुलवाने के लिए कृपया 35.00 रुपए (रजिस्ट्री हेतु 10.00 रुपए समेत) भेजें। 5 या उससे अधिक प्रतियाँ मँगवाने पर डाक खर्च की छूट है।

राशि **एकलव्य** के नाम से बने मनीऑर्डर या ड्राफ्ट से इस पते पर भेजें-

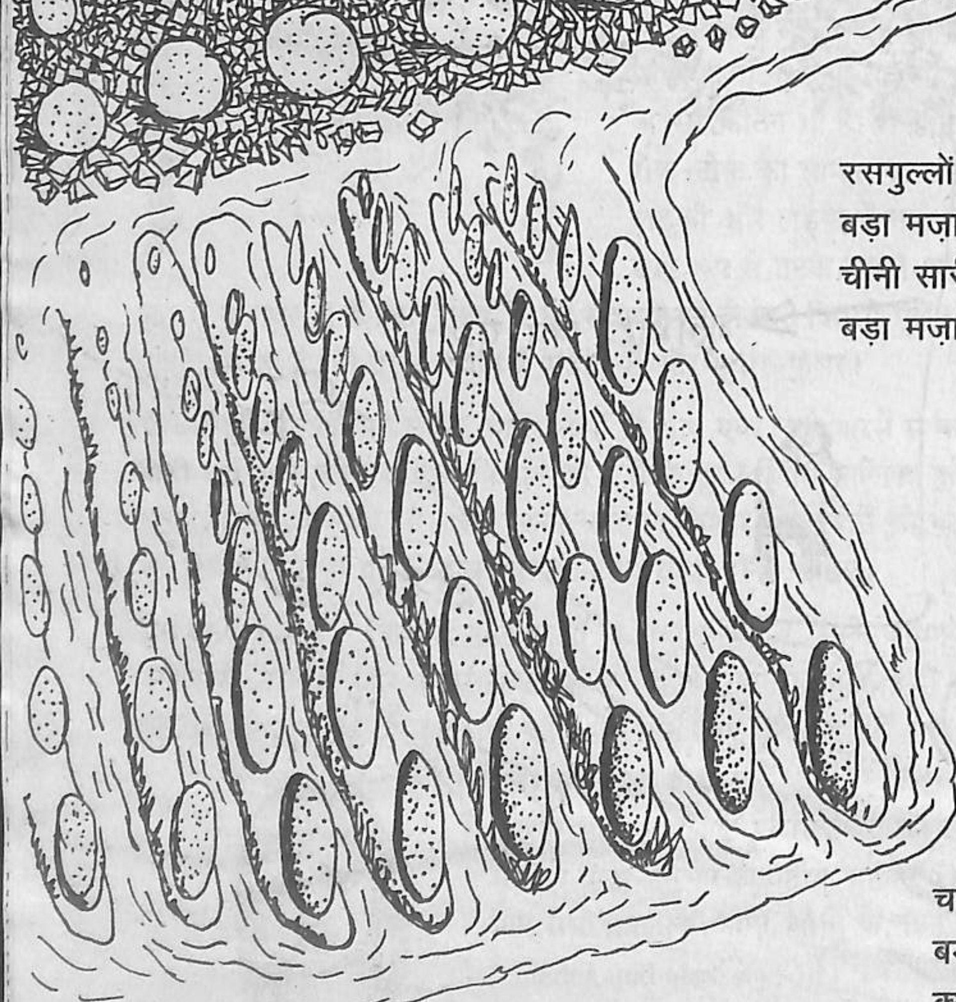
एकलव्य
ई-1/25, अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन - 563380



शीतल महाजन, पाँचवी, जसौंदी, बुरहानपुर, म.प्र.



बड़ा मजा



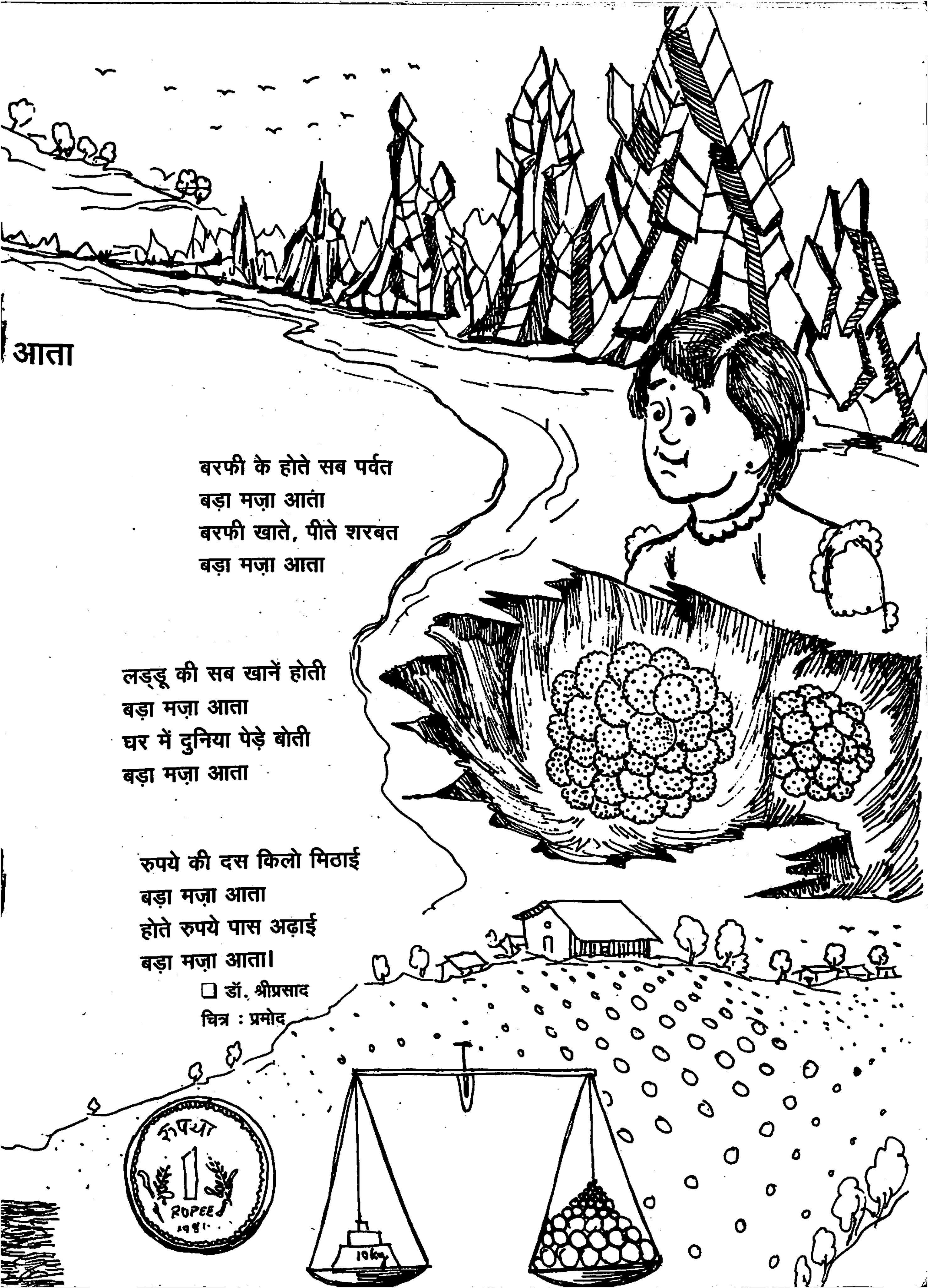
रसगुल्लों की खेती होती
बड़ा मज़ा आता
चीनी सारी रेती होती
बड़ा मज़ा आता

बाग लगे चमचम के होते
बड़ा मज़ा आता
शरबत के बहते सब सोते
बड़ा मज़ा आता

चरागाह हलुए का होता
बड़ा मज़ा आता
क्या कोई हलुए को रोता
बड़ा मज़ा आता



आता



बरफी के होते सब पर्वत
बड़ा मज़ा आता
बरफी खाते, पीते शरबत
बड़ा मज़ा आता

लड्डू की सब खानें होती
बड़ा मज़ा आता
घर में दुनिया पेड़े बोती
बड़ा मज़ा आता

रुपये की दस किलो मिठाई
बड़ा मज़ा आता
होते रुपये पास अढ़ाई
बड़ा मज़ा आता।

❑ डॉ. श्रीप्रसाद

चित्र : प्रमोद

नाविक विद्रोह



1939 में जब दूसरा विश्व युद्ध छिड़ा तो ब्रिटिश सरकार ने ज़बरदस्ती हिन्दुस्तान को भी उसमें घसीट लिया। इस बात पर पूरे देश में काफी गुस्सा फैला कि ब्रिटिश शासन ने प्रांतीय सरकारों से राय लिए बग़ैर पूरे देश को युद्ध में धकेल दिया। इसी गुस्से ने 1945 के पूरे साल कई हड़तालों व विरोध आंदोलनों को जन्म दिया।

इसी बीच नवम्बर 1945 में ब्रिटिश शासन ने आज़ाद हिन्द फौज के तीन अफ़सरों शाहनवाज़ खाँ, पी. के. सहगल व जी. एस. ढिल्लन पर ब्रिटिश भारत के शासक के खिलाफ जंग छेड़ने के आरोप में मुकदमा चलाया और उन्हें दोषी करार दिया। इस वाकये ने हिन्दुस्तानियों के गुस्से को और अधिक बढ़ावा दिया जो 1946 में तीन प्रमुख प्रदर्शनों के रूप में सामने आया। इसमें से सबसे ख़ास था फ़रवरी 1946 में हुआ नाविक विद्रोह, जिसने ब्रिटिश शासन की जड़ें हिला दी थीं।

यह नाविक विद्रोह शुरू हुआ नौसेना के जवानों की आम हड़ताल से। शुरू में बम्बई के बन्दरगाह पर खड़े जहाज एच. एम. आई. एस. तलवार के कर्मचारियों ने 18 फरवरी 1946 को हड़ताल की घोषणा की। उनकी यह हड़ताल उनको मिलने वाले ख़राब भोजन, गोरे अफ़सरों द्वारा किये जाने वाले रंगभेद और अन्य दुर्व्यवहारों के विरोध में थी।



श्री बी. सी. दत्त

एक भारतीय कर्मचारी बी. सी. दत्त द्वारा तलवार

जहाज़ पर "भारत छोड़ो" लिखे जाने पर उसे सज़ा दी गई थी। इसका भी नौसैनिकों ने जमकर विरोध किया। अगले दिन दो और जहाज़ कासल व फोर्ट बैरक्स के जवान भी इस जंग में शामिल हो गए।

इसके बाद हड़तालियों की एक सभा में एक अगुआ ने उनकी 8 माँगों की घोषणा की जो इस प्रकार थीं -

1. आज़ाद हिन्द फौज के अफ़सरों समेत सभी राजनैतिक बंदियों की रिहाई।
2. तलवार के कमांडिंग अफसर द्वारा कर्मचारियों के प्रति अपमानजनक भाषा उपयोग करने के ख़िलाफ़ कार्यवाही।
3. युद्ध के बाद शांतिपूर्ण रोज़गारों में नौसैनिकों की नियुक्ति।
4. रॉयल नेवी के अंग्रेज अफ़सरों के बराबर की तनख्वाह आदि।
5. रॉयल नेवी के कैंटीन में जाने की छूट।
6. बेहतर भोजन।
7. नौसेना छोड़ने पर वर्दी वापस न करने की छूट और
8. इन्डोनेशिया भेजी गई भारतीय सैनिक टुकड़ियों को वापस बुलाना।

48 घण्टों के अंदर ही यह विद्रोह नौसेना के एक बड़े हिस्से में फैल गया। 74 जहाज़ों, छोटी नावों के 4 बेड़ों और 20 तटीय केन्द्रों पर इसका प्रभाव दिखाई देने लगा। बम्बई से शुरू हुई विद्रोह की यह लहर कलकत्ता और कराची के बन्दरगाह वाले शहरों तक भी जा पहुँची।

19 फ़रवरी 1946 को कराची के बन्दरगाह पर खड़े जहाज़ एच. एम. आइ. एस. हिन्दुस्तान



नाविक विद्रोह के लिए बनाया गया एक पोस्टर

पर भी विद्रोहियों ने पूरा कब्ज़ा जमा लिया। तलवार जहाज़ के नाविकों ने बम्बई के नौसेना के हेडक्वार्टर के मस्तूल पर लगे ब्रिटिश झण्डे को फाड़ डाला। उसकी जगह उन्हौंने स्वतंत्रता की लड़ाई में एकता के प्रतीक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, मुस्लिम लीग व कम्युनिस्ट पार्टी के झण्डे फहराए।

इस विद्रोह के दूसरे दौर में इसे उन शहरों की आम जनता से बहुत समर्थन मिला जहाँ ये प्रमुख रूप से चल रहे थे। ख़ासकर कलकत्ता और बम्बई शहरों में एक व्यापक ब्रिटिश-विरोधी भावना फैल गई थी। जगह-जगह आम जनता बैठकें, सभाएँ, जुलूस आयोजित कर इन नाविकों को समर्थन जता रही थी। छात्र और सरकारी कर्मचारी, मिल व कारखानों के मज़दूर भी कम्युनिस्ट पार्टी की पुकार पर हड़ताल कर सड़कों पर उतर आए। दुकानदारों, व्यापारियों, होटल-मालिकों ने भी

नाविकों के विद्रोह के समर्थन में हड़ताल कर दी।

संघर्ष के तीसरे दौर में देश भर के दूसरे इलाकों से भी लोगों ने इस विद्रोह को समर्थन जताया। मद्रास, विशाखापट्टनम, कलकत्ता, दिल्ली, कोचीन व अम्बाला के वायुसैनिक केन्द्रों में भी इसके समर्थन में सांकेतिक हड़ताल हुई। बम्बई, पूना, कलकत्ता, जेसोर व अम्बाला के वायुसैनिक केन्द्रों में भी प्रतीकात्मक हड़ताल की गई।

इस तीव्र विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सैनिक-वायसराय वैवेल ने विद्रोह फैलने के कुछ दिन बाद ही ब्रिटिश सेना को बुला लिया। लेकिन विद्रोह कम नहीं हुआ। 22 फ़रवरी 1946 को सरदार वल्लभ भाई पटेल के हस्तक्षेप करने पर इन लोगों ने आत्मसमर्पण किया। लेकिन इससे पहले ही सैनिक कार्यवाही में बम्बई में ही लगभग 250-300 लोग मारे जा चुके थे। इनमें प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता श्रीमती कमल धाँडे भी शामिल थीं। कराची में भी आत्मसमर्पण के दौरान 6 लोगों की जानें चली गईं।


श्रीमती कमल धोडे

आत्मसमर्पण की घड़ी में भी इन नाविकों ने यह घोषणा की कि वे सरदार पटेल की सलाह पर भारतीय जनता के समक्ष आत्मसमर्पण कर रहे हैं, ब्रिटिश सरकार के समक्ष नहीं।

इस लेख के लिये जानकारी इण्डियाज़ स्ट्रगल फॉर इण्डिपेंडेंस (लेखक: बिपिन चन्द्र व साथी), मुक्तिर संग्रामे भारत (प्रकाशक: पश्चिम बंगाल सूचना व संस्कृति विभाग) एवं जानकारी व चित्र इण्डियाज़ स्ट्रगल फॉर इण्डिपेंडेंस – विजुयल्स एण्ड डॉक्युमेंट्स (प्रकाशक: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान) से साभार ली गई है। रेखांकन सुश्री प्रीति भटनागर।



झूलती मछली

तुमने तरह तरह की मछलियाँ बनाई होंगी। मछलियाँ होती भी तो हैं कई तरह की। हमें कहीं से इस तरह की मछली बनाने का तरीका मिला, बनाकर देखी बहुत ही बढ़िया बन गई। तुम भी कोशिश करो।

इसके लिए ऐसा काग़ज़ जुटा लो जो न तो बहुत पतला हो, न बहुत मोटा हो। पेन्सिल, कैंची वगैरह तो तुम रखकर ही बैठोगे। भई, ये तो ज़रूरी चीज़ें हैं।

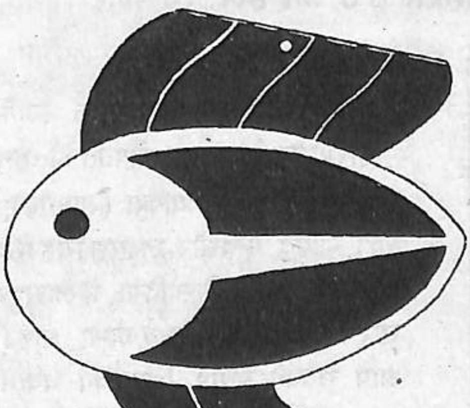


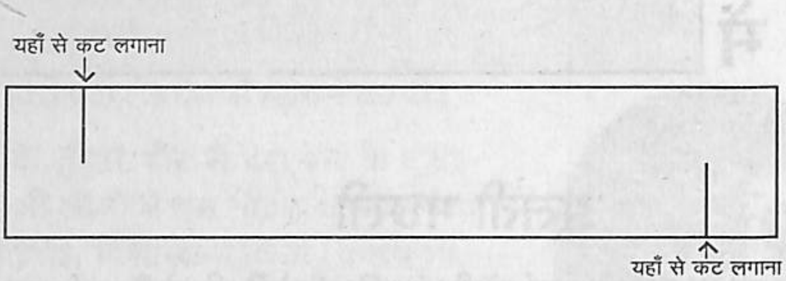
तो शुरू करो। काग़ज़ में से एक आयताकार टुकड़ा ले लो। लम्बाई अगर 9 से.मी. है तो चौड़ाई 6 से.मी. हो। इसी अनुपात में काग़ज़ बड़ा छोटा ले सकते हो। अगर यह अनुपात नहीं होगा तब भी मछली तो बनेगी ही पर उसका आकार कुछ अलग-सा हो जाएगा।



आयताकार काग़ज़ को बीच से मोड़कर दोहरा कर लो। अब इस दोहरे काग़ज़ पर चित्र की तरह आकृति बनाओ।

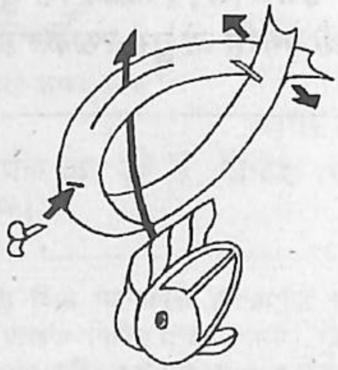
काग़ज़ पर बनाने के बाद आकृति के बाहर का सारा हिस्सा काटकर निकाल दो। यहाँ एक बात का ध्यान रखना, दोहरा काग़ज़ जहाँ से जुड़ा था वहाँ नहीं काटना। मतलब यह कि जुड़ी हुई किनार को जुड़ा ही रहने देना।





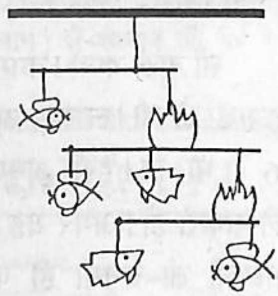
अब एक लम्बी सी पट्टी काट लो जो लगभग 2 से.मी. चौड़ी और 10 से.मी. लम्बी हो। इस पट्टी में दोनों आख़िरी छोरों पर एक-एक से.मी. जगह छोड़कर कट लगाओ। इन दोनों कट को आपस में फँसा दो।

तुमने जो मछली काटकर रखी है उसे इस पट्टी के छल्ले के भीतर फँसाना है। इसके लिए ऊपर और नीचे दोनों तरफ से पंखों को बाहर निकालने के लिए कट लगा लो। ये कट लगाने के लिए मछली को छल्ले से मिलाकर देखो और सही जगह कट लगाओ।





तैयार हो गया मछली का एक मॉडल। इसी तरह की कई मछलियाँ तैयार करके धागे में पिरोकर लटका सकते हो।



वर्ग पहेली 80 का हल

र	ट	ना		श		पा	द	री
ता		क	क	ह	रा		र	
लू	म				त	ह	जी	ब
	शी	र्षा	स	न		म		ह
स	न		बा		कू		सी	ना
ह		जी		पि	क	नि	क	
र	सा	त	ल				र	ग़
	ग		प	र	चू	नी		ज़
के	र	ल		मा		म	शा	ल

वर्ग पहेली – 80 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं – हरिप्रसाद पैकरा व प्रदीप तिर्की, चन्दौरा, सरगुजा; रविकान्त मित्तल, ब्यावरा (राजगढ़); हबीब अनवर राही, जावद, मन्दसौर; लक्ष्मण सिंह सिदार, कुड़ेकेला, रायगढ़; अनुपम सिसोदिया, बिलासपुर; नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल; एवं वैभव जेम्स, धार (**सभी म.प्र.**)। **आप सबको बधाई !** आपको चकमक का अप्रैल 1998 का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

शेरा

❑ विजय गुप्त



कुत्ते का एक छोटा सा बच्चा था। शेरा नाम था। उसके रहते दूसरे मुहल्ले का कोई भी कुत्ता वहाँ नहीं आ सकता था। नए कुत्ते को देखते ही वह आसमान सिर पर उठा लेता। भूंक-भूंक कर मुहल्ले के सभी कुत्तों को इकट्ठा कर लेता। सभी मिल कर उस नए कुत्ते को खदेड़ देते।

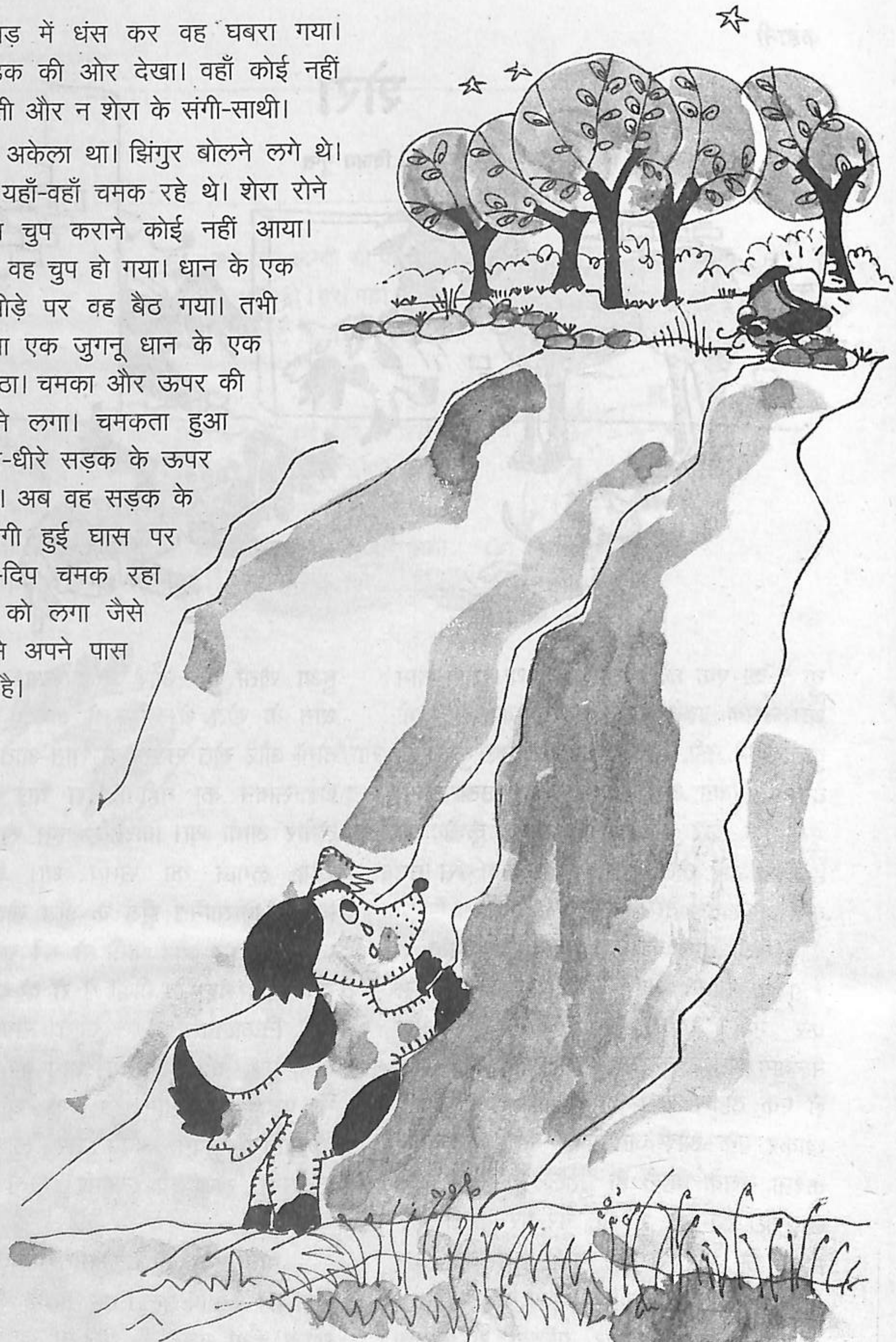
मोती नाम का कुत्ता एक दिन भूल से शेरा के सामने आ गया। शेरा उछल-उछल कर भूंकने लगा। मोती ऊँचा पूरा और बलवान था। उसने आँखें लाल कर अपने मुँह से एक ठोकर शेरा को लगाई। शेरा गुलाटी खाकर एक ओर जा गिरा। मोती कुछ और करता उसके पहले ही मुहल्ले के सभी कुत्ते आ गए। खों-खों, भौं-भौं, गर्र-गर्र करते कुत्ते मोती की ओर लपके। मोती दुम दबा कर भागा। शेरा भी साथियों के साथ दौड़ने लगा।

मोती सड़कों और गलियों से भागता हुआ खेतों की ओर दौड़ गया। दोनों ओर धान के खेत थे। बीच में कच्ची सड़क थी। दोनों ओर खेत सड़क से सात-आठ फीट नीचे थे। सावन का महीना इस बार खूब पानी लेकर आया था। किसान बहुत खुश थे। यह रोपा लगाने का समय था। खूब सबेरे किसान-किसानिन झुँड के झुँड खेतों में पहुँच जाते। कीचड़ और पानी से भरे खेतों में गीत गाते और धान के बीड़ों में से दो-दो-तीन-तीन पौधे निकालकर रोपते जाते। रोपा का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। धान का बीड़ा खेतों में पड़ा था। शाम हो गई थी। किसान-किसानिन अपने अपने घर लौट गए थे। सुनसान खेतों के ऊपर कुत्तों की दौड़ चालू थी।

मोती के पीछे भागते-भागते अचानक शेरा का पैर फिसला। वह सड़क से ढुनमुनिया खाता हुआ गद्द से खेत में जा गिरा। पानी

और कीचड़ में धंस कर वह घबरा गया। उसने सड़क की ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था। न मोती और न शेरा के संगी-साथी।

शेरा अकेला था। झिंगुर बोलने लगे थे। जुगनू भी यहाँ-वहाँ चमक रहे थे। शेरा रोने लगा। उसे चुप कराने कोई नहीं आया। रो-रो कर वह चुप हो गया। धान के एक मोटे से बीड़े पर वह बैठ गया। तभी उसने देखा एक जुगनू धान के एक बीड़े से उठा। चमका और ऊपर की ओर उड़ने लगा। चमकता हुआ जुगनू धीरे-धीरे सड़क के ऊपर पहुँच गया। अब वह सड़क के किनारे उगी हुई घास पर बैठा दिप-दिप चमक रहा था। शेरा को लगा जैसे जुगनू उसे अपने पास बुला रहा है।



शेरा उठा। धान के बीड़ों पर कूदता हुआ किनारे पहुँच गया। सड़क बहुत ऊपर थी। शेरा का दिल बैठ गया। वह छोटा था। खेत और सड़क के बीच मिट्टी की चिकनी और ऊँची दीवार थी। वह उदास हो गया। जुगनू जल्दी-जल्दी चमकने लगा। शेरा को लगा जैसे जुगनू कह रहा है- " हिम्मत मत हारो दोस्त। कोशिश करो। ऊपर आओ।"

शेरा ने पानी और कीचड़ अपने बदन से झटका। अगले दोनों पंजों को उसने मिट्टी में धँसाया। पिछले पंजों को ऊपर की ओर खींचा। अब वह मिट्टी की दीवार से चिपका हुआ था। दीवार पर घास-पात और कुछ जंगली पौधे भी थे। घास-पात के सहारे वह ऊपर की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा। अभी शेरा बीच में ही पहुँचा था कि फिसल गया और लुढ़कता हुआ छपाक से पानी में गिरा।

जुगनू उड़ा और मिट्टी की दीवार से निकले एक पौधे पर चमकने लगा। शेरा का पाँव छिल गया था। वह कीचड़ से निकला। खेत के पानी में उसने चप-चप अपनी जीभ चलाई। अपने घावों को जीभ से चाटकर साफ किया। बीच दीवार पर चमचमाते जुगनू को देख कर मुस्कुराया और दीवार पर पेट, पंजों और मुँह के सहारे चढ़ने लगा। शेरा बार-बार चढ़ता था और फिसलकर खेत में गिर पड़ता था।

एक बार, दो बार, तीन बार नहीं - वह सात बार गिरा। उसे चोट लगी। खून भी निकला लेकिन उसने हिम्मत न हारी। दोस्त जुगनू उड़-उड़ कर, चमक-चमक कर हिम्मत देता रहा। आठवीं बार शेरा विजयी हुआ।

अब वह सड़क पर था। अगले पाँवों पर अपना सिर रख कर शेरा बड़े प्यार से जुगनू को देख रहा था। रात हो गई थी। अब ढेर सारे जुगनू चारों ओर चमक रहे थे। एक कतार में लगे धान के पौधे खेतों में धीरे-धीरे झूम रहे थे। ■

❑ सभी चित्र : सबीना सबरवाल





माथापच्ची

(1)

पिछले दिनों मुझे एक चिट्ठी मिली। काफ़ी अजीबोगरीब! और ताज्जुब की बात यह कि वह चिट्ठी मेरी ही थी और सही सलामत मुझ तक पहुँच भी गई। उस पर पते की जगह लिखा था –

प्रित,
मककच
राद्वा एलव्यक
पोलाभ

लगता था लिखने वाली लड़की ने नया-नया पढ़ना-लिखना सीखा था। या फिर वह कोई माथापच्ची की उस्ताद होगी। इस चिट्ठी के पते को पढ़ने में डाकिए ने तो अच्छी ख़ासी माथापच्ची की होगी। क्या तुम बता सकते हो कि इस पर लिखा क्या है?

(2)





यहाँ छह खिलौने वाले भालू बने हैं। वैसे तो सब लगभग एक से दिखते हैं पर सबमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है, सिवाय दो के। दो भालू ऐसे हैं जो बिल्कुल एक जैसे हैं। हमशक्ल जुड़वाओं की तरह। क्या उन दोनों को ढूँढ सकते हो?









(3)



एक आदमी सड़क पर चल रहा था। दरअसल वह पैदल रेस का खिलाड़ी था और अपने अभ्यास पे निकला था। शुरू में वह धीरे-धीरे चलता और फिर हर मिनट अपनी रफ़्तार बढ़ाता जाता। पहले मिनट में उसने 30 फीट की दूरी तय की थी। दूसरे मिनट में 36 फीट की। तीसरे मिनट में वह 42 फीट चला और चौथे मिनट में 48 फीट। इसी तरह वह हर मिनट अपनी रफ़्तार बढ़ाता जाता था। और जिस सड़क पर वह अभ्यास के लिए निकला था उसे पूरा पार करने में उसे 720 मिनट लगे। क्या तुम इस खिलाड़ी की रफ़्तार में बढ़ोत्तरी की मदद से हिसाब लगाकर बता सकते हो कि वह सड़क कितनी लम्बी होगी, जिस पर वह चल रहा था?

(4)

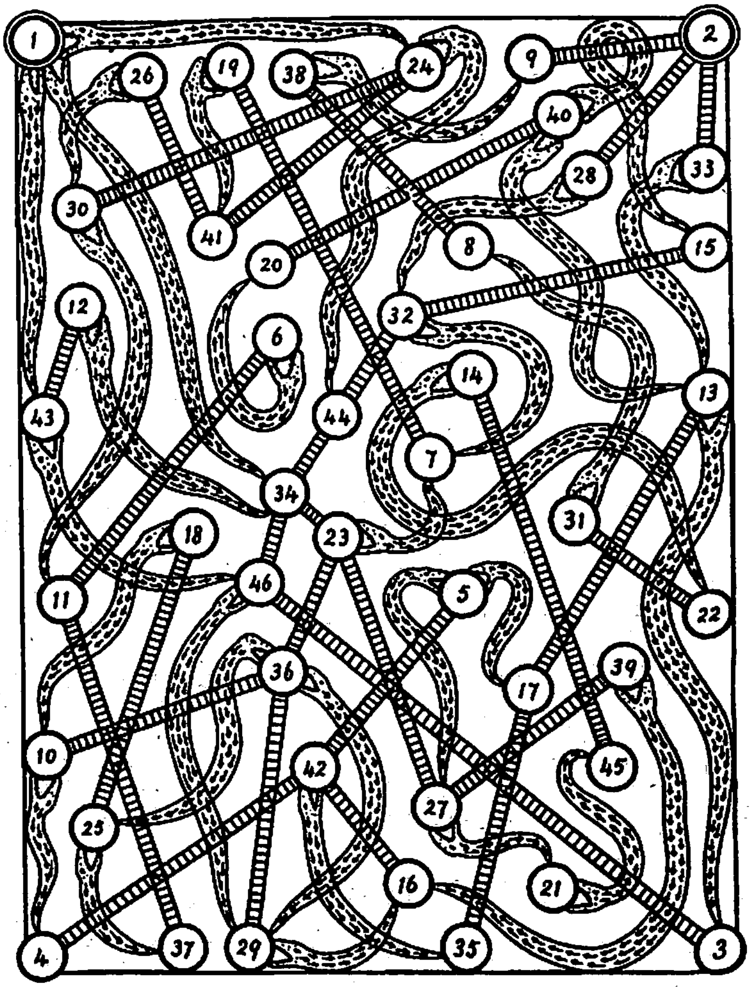
चलो एक ऐसा सवाल पूछते हैं जो सवाल भी है और चुटकुला भी। मान लो एक पेड़ पर पाँच कौवे बैठे हैं। अगर मैं गुलेल चलाकर उनमें से तीन को गिरा दूँ (जो मैं सचमुच नहीं करूंगी), तो पेड़ पर कितने कौवे बचेंगे?

और हाँ, कल जब मैं पढ़ने बैठी तो मेरी मेज़ पर तीन मक्खियाँ भिनभिनाने लगीं। मैंने अपनी किताब से दो को तो मेज़ पर धराशायी कर दिया। अब मेज़ पर कितनी मक्खियाँ बचीं?

(5)

गोलू के बाबा पूरी कोशिश कर रहे थे कि वह मन लगाकर गणित के सवाल हल करे। उन्होंने उसे 18 सवाल हल करने को दिए थे। और यह शर्त रखी कि अगर वह सारे सवाल हल कर ले तो हर सही हल पर वे उसे 1 रुपया देंगे, पर हर ग़लत सवाल पर 2 रुपये काट लेंगे। गोलू ने जब सारे सवाल हल कर लिए तो उसे 6 रुपए मिले। सोचकर बताओ कि उसने कितने सही हल निकाले होंगे

(6)



यह भी साँप-सीढ़ी का ही खेल है। पर कुछ नए ढंग का। यहाँ तुम्हें साँपों और सीढ़ियों के ज़रिए सफ़र करते हुए बाईं ओर के ऊपरी सिरे पर बने (1) वाले गोले से दाईं ओर के ऊपरी सिरे पर बने (2) वाले गोले तक पहुँचना है।

सफ़र करना यानी साँप के मुँह में घुसे तो फिसलकर उसकी पूँछ तक पहुँच जाना और सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ जाना। ख्याल रखना कि साँप के ज़रिए केवल नीचे उतरा जा सकता है। और सीढ़ी के सहारे सिर्फ़ ऊपर जा सकते हैं। और हमें गोले-गोले होते हुए ही सफ़र करना है। बीच में से इधर-उधर नहीं भटक सकते हम। और (1) से (2) तक पहुँचने के कई रास्ते हैं।

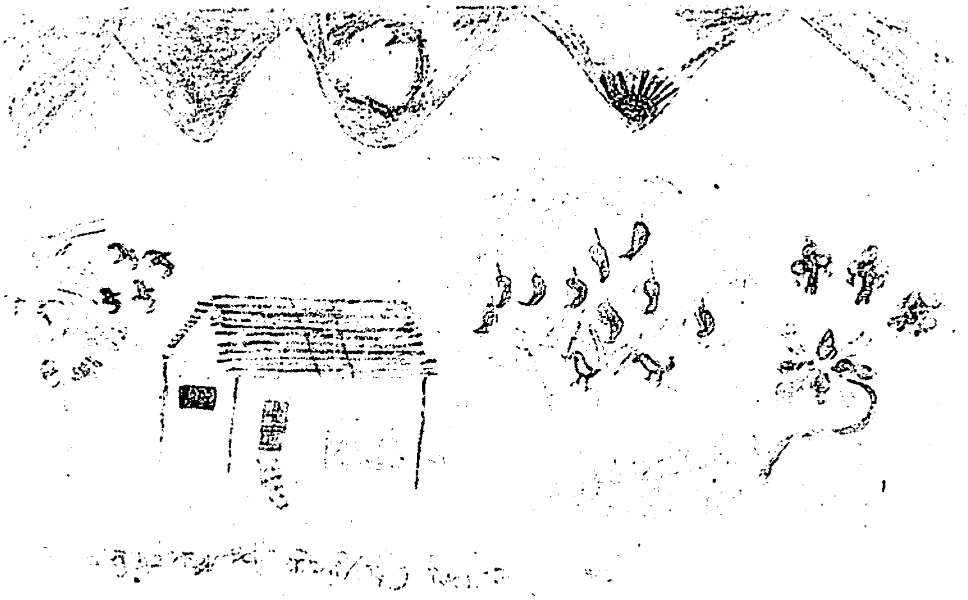
जब एक बार सफ़र पूरा कर लो तो दूसरी बार यह गिनते हुए सफ़र करना कि कितने गोले पार किए तुमने। फिर आख़िर में (1) से (2) तक जाने का सबसे छोटा रास्ता ढूँढना। हम यह बता देते हैं कि यह सबसे छोटा रास्ता 16 गोलों में से होकर गुज़रता है।

बूझो पहेली

दिन को सोए, रात को रोए
जितना रोए, उतना खोए।

बिजेश कुमार, रमेश भाई, पाँचवीं

पिकनिक



राजीव कुमार, छठवीं, करेली, रायपुर, म.प्र.

रविवार का दिन था। मैंने और मेरी सहेलियों ने पिकनिक मनाने कहीं अच्छी जगह जाने की सोची। गर्मी के दिन थे। स्कूल की छुट्टियाँ चालू नहीं हुई थीं। मेरे खेत पर पन्द्रह आम के पेड़ थे। मैंने सोचा क्यों न मेरे खेत पर ही पिकनिक मनाई जाए। मेरी सहेलियाँ भी राजी हो गईं। मेरा खेत मेरे शहर से पाँच किलोमीटर दूर था। हम सब खेत पर जाने के लिए किराए की सायकिल ले आईं। हम अपना अपना सामान लेकर खेत के लिए रवाना हुईं। 20 मिनट में हम खेत पर पहुँच गईं। पहले हमने घूमकर खेत को देखा। फिर एक बहुत घने आम के पेड़ के नीचे खाना खाने बैठ गईं। मेरी सहेली लता और सपना ने कुछ आम तोड़े। फिर वे भी हमारे साथ खाना खाने बैठ गईं।

हम खाना खा रहे थे इतने में मेरी सहेली अनीता की नजर हम जिस पेड़ के नीचे बैठे थे, उसी पेड़ पर गई। उसने देखा कि आम की एक डाली जो बिल्कुल हमारे ऊपर थी, वह बिल्कुल टूट गई, बस थोड़ी-सी अटकी थी। अनिता चौंक गई और जोर से चिल्लाई, उठो, दूर हटो। हम सब दूर हो गईं। इतने में वह डाली गिर गई। हमारे खिलौने, रेडियो टूट गए। हमने ज्यों त्यों सामान उठाया और घर आ गईं। फिर हम बहुत दिनों तक पिकनिक मनाने नहीं गईं। यदि उस डाली को टूटते अनीता न देखती तो हम सब उसके नीचे दब जाते।

अर्चना पंवार, आठवीं, चौकड़ी, खिरकिया, होशंगाबाद, म. प्र.

जुगनू

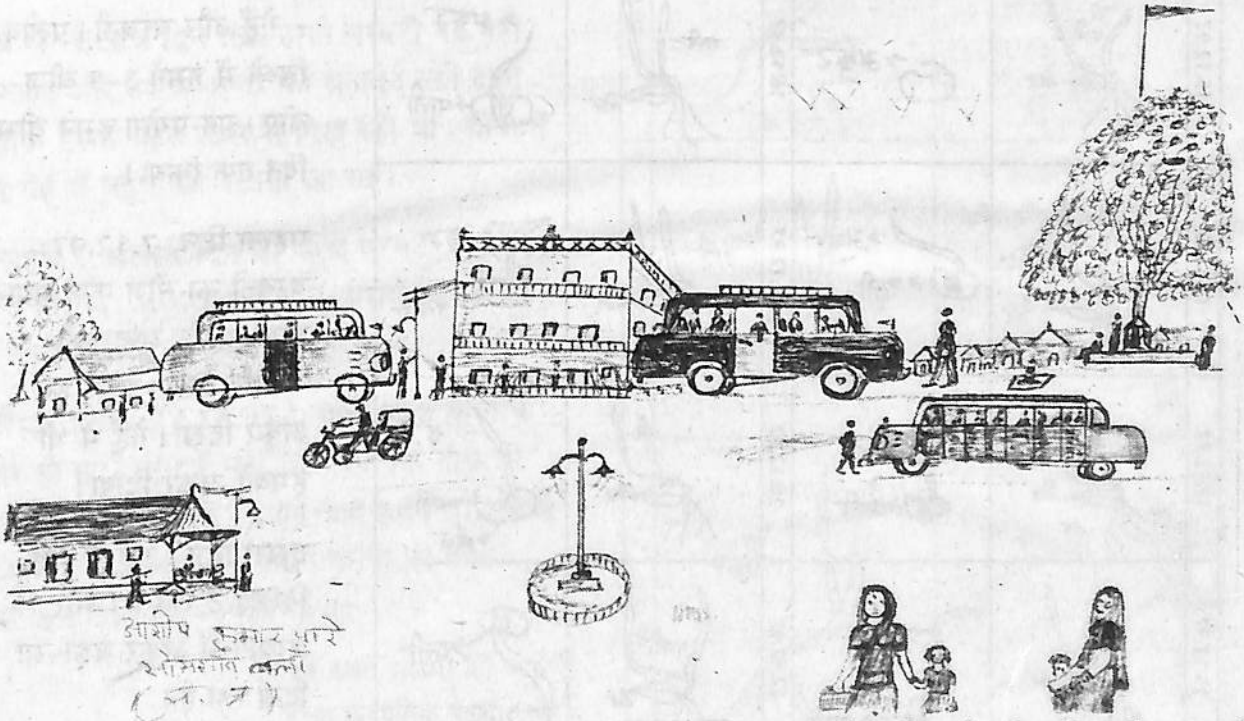
कितने प्यारे हैं ये जुगनू
सबको अच्छे लगते जुगनू
अंधियारा जब होता है तो
उजियारा लाते ये जुगनू
जब कभी कोई बच्चा रोता
उसका मन बहलाते जुगनू
हर पथिक को राह दिखलाते
ये सुन्दर सुन्दर जुगनू
इतने अच्छे अच्छे जुगनू
सबको ही मनभावन लगते
सारे अंधेरे पेड़ों में
टिमटिमाते ये प्यारे जुगनू

पल्लवी नौटियाल, छठवीं, राँची, बिहार

चोर मिले

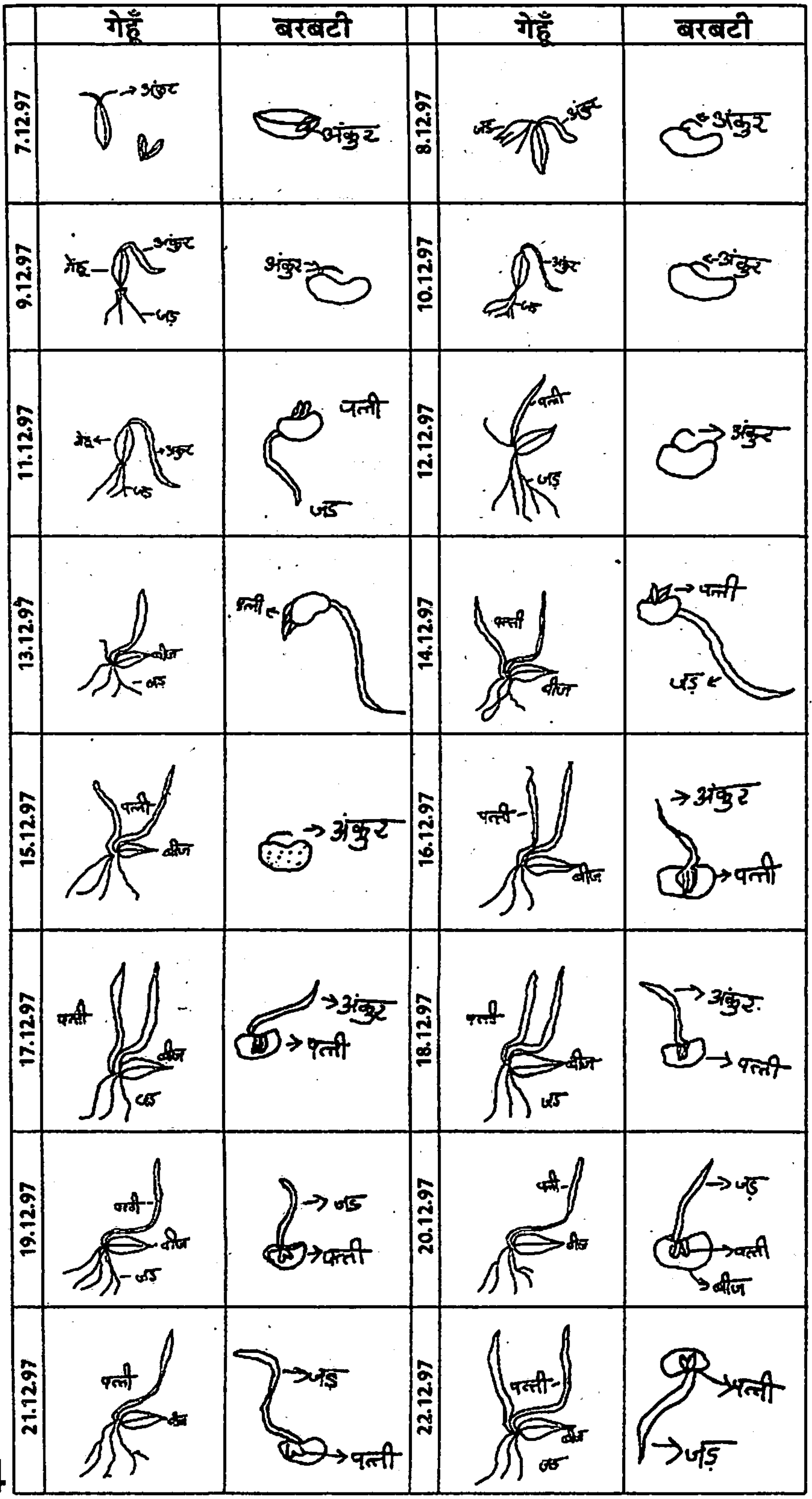
एक दिन की बात है कि मैं अपने घर से अपनी बहन के पास आगरा गया था, तो मैं बस से उतरा तो मुझे चोर मिल गए। चोर ने पूछा कि आप कहाँ जा रहे हो। मैंने कहा कि मैं अपनी बहन के पास जा रहा हूँ। मैं चला तो वो मेरे पीछे चलने लगे। मैंने पूछा कि भाई कहाँ जा रहे हो तो वो बोले हम अपनी बहन के पास जा रहे हैं। फिर उन्होंने मुझे पकड़ लिया। पैसे छुड़ा लिए और बैग, मेरी घड़ी भी। और मेरे पास कुछ नहीं बचा। और मुझे मारा। मैं उठकर अपनी बहन के घर पहुँचा तो बहन ने पूछा कि भाई तुम्हारी हालियत (हालत) की ने (किसने) बिगारी। तब मैंने बताया कि रास्ते में मुझे चोर मिल गए थे।

फेरन सिंह सिकरवार, पंचमपुरा, मुरैना, म. प्र.



आशीष पारे, सोमगाँवकलाँ, म. प्र.

वृद्धि होते देखी!



पौधों की वृद्धि के बारे में हमने लोगों से अधिकतर यह सुना है कि पौधों में भी मनुष्य की तरह वृद्धि होती है। उनमें भी खाने-पीने और श्वसन करने की क्रियाएँ होती हैं। तो इस बात को जानने के लिए हमने एक प्रयोग किया जो इस प्रकार है।

हमारी क्लास 4-4 लड़कियों की टोलियों में बँटी हुई है। प्रयोग के लिए सभी टोलियों ने 8-8 डिब्बे जमा किए।

हमने उन डिब्बों में मिट्टी डाली और हमारी शिक्षिका ने हमको दो प्रकार के बीज दिए – गेहूँ और बरबटी। प्रत्येक डिब्बे में हमने 5-5 बीज बोए। यह प्रयोग हमने बीस दिन तक किया।

पहला दिन, 7.12.97: बरबटी का बीज फूल गया। हमने उसके अन्दर की बनावट देखी। इसमें हमें अंकुर दिखा। गेहूँ में भी हमको अंकुर दिखा।

दूसरा दिन : गेहूँ में जड़ दिखाई दे रही है। और बरबटी में अंकुर बड़ा-सा दिख रहा है।

तीसरा दिन : बरबटी में अंकुर दिख रहा है। गेहूँ में प्रांकुर और जड़ (मूलांकुर) दिख रहे हैं।

चौथे से छठे दिन तक : बरबटी में हमको तना (टहनी) दिखाई दिया। और अंदर की बनावट में पत्तियाँ दिखाई दीं। गेहूँ में हमको अब जड़ और पत्ती दिखाई देने लगी है।

सातवाँ दिन : बरबटी की ऊपरी पत्तियाँ दिखाई दीं। गेहूँ में जड़ और पत्ती ही दिख रही है।

आठवें दिन : गेहूँ के पौधे की जड़ों ने मिट्टी को अच्छी तरह पकड़ लिया है। हमको उसे उखाड़ने में कठिनाई हुई। उसे लकड़ी की सहायता से निकालना पड़ा ताकि उसे नुकसान नहीं पहुँचे। बरबटी के बीज से दो बीजपत्री होकर उसमें से पत्ती निकली।

नौंवें दिन : बरबटी में जड़ भी दिखाई देने लगी है। गेहूँ पहले जैसा ही है।

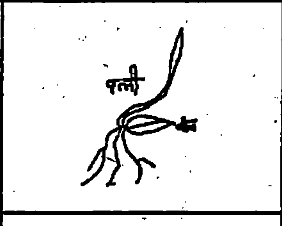
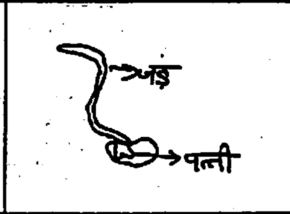
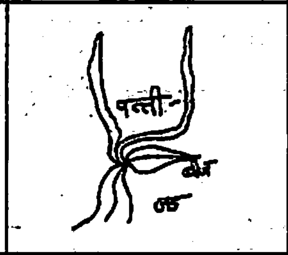
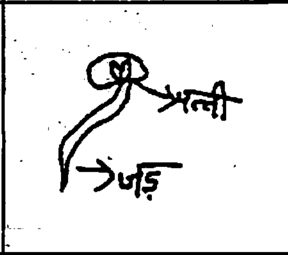
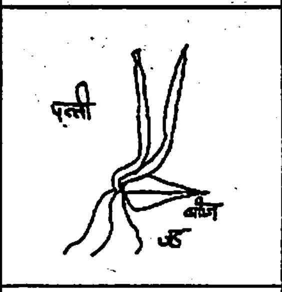
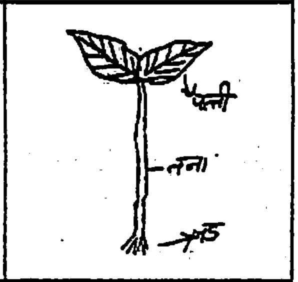
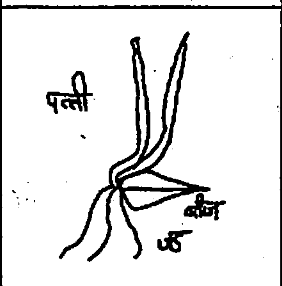
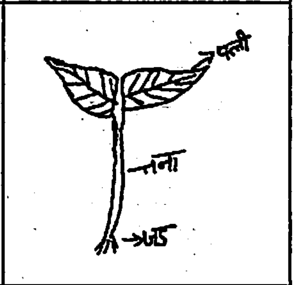
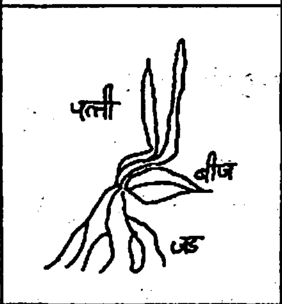
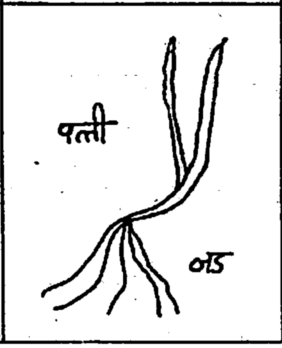
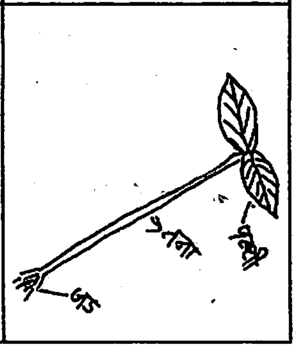
दसवें दिन : गेहूँ में दो पत्तियाँ दिखाई देने लगीं।

अब से चौदहवें दिन तक हमने बरबटी को नहीं निकाला और उसके अन्दर की बनावट नहीं देखी क्योंकि उसमें बढ़त ऊपर से दिख रही थी। चौदहवें दिन गेहूँ में बहुत-सी पत्तियाँ आ गईं।

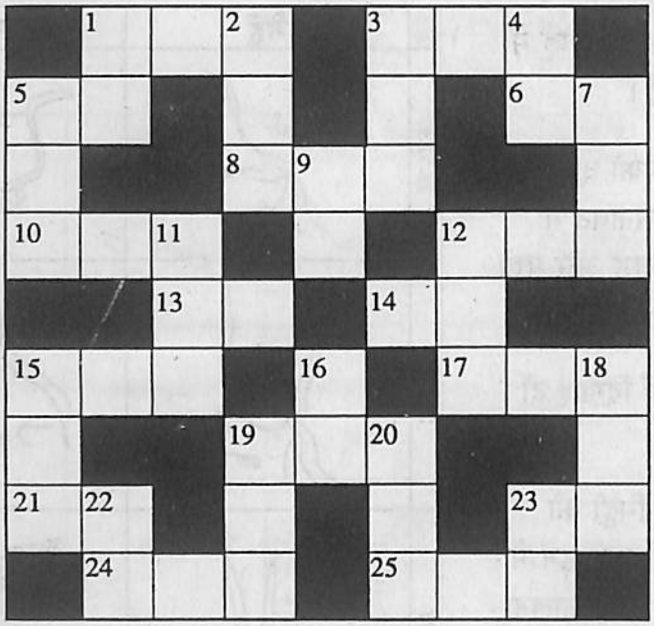
सोलहवें से बीसवें दिन के बीच बरबटी के बीज ख़त्म हो गए। अठारहवें दिन से बीसवें दिन के बीच गेहूँ के बीज भी ख़त्म हो गए।

उन्नीसवें दिन (27.12.97): दोनों बीज के पौधे तैयार हो गए। तो हमें पता चल गया कि पौधे भी मनुष्यों की तरह बढ़ते हैं। यह बात हमने वृद्धि वाले अध्याय में भी पढ़ी और प्रयोग करके भी देखा इसलिए हमको बहुत मज़ा आया।

कक्षा आठवीं की छात्राएँ
कन्या माध्यमिक शाला, भौंरा
शाहपुर, जिला बैतूल, म. प्र.

	गेहूँ	बरबटी
23.12.97		
24.12.97		
25.12.97		
26.12.97		
27.12.97		
28.12.97		

वर्ग पहेली – 83



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. पुरस्कार (3)
3. इलाहाबाद लखनऊ में मेघ है (3)
5. पश्चात् (2)
6. किसी चीज़ का नाश होना भी और एक बीमारी भी (2)
8. मदन खरा बोलता है में अदा है (3)
10. रमज़ान की काटछाँट और उलटफेर में किसी की कब्र या दरगाह (3)
12. बल या शक्ति (3)
13. भगवान (2)
14. हमेशा भी और पुकार भी (2)
15. दिन (3)
16. कदम–कदम में कांति है (3)
18. समीकरण की काटछाँट में हवा है (3)
20. बेहोशी (2)
22. दरवाज़ा और रेट में जो साझा है (2)
23. यतन की उलटफेर में बेटा है (3)
24. वह गोल बर्तन जिसमें सब्ज़ी आदि पकाई जाती है (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. एक त्यौहार (2)
2. बहुत बारीक (3)
3. दशहरा दीपावली के दिनों में पकने वाली एक फसल (3)
4. 1,00,000 (2)
5. एक गिरीदार फल (3)
7. गुर्दा (3)
9. खड़गपुर में पक्षी है (2)
11. पैसेवाला या सरदार (3)
12. देता दाद बड़ी मात्रा में (3)
15. मस्तिष्क (3)
16. मीनमेख में गीलापन (2)
17. नदी के किनारे की ज़मीन (3)
18. वह जो निरंतर चलता रहता है और किसी की पकड़ में नहीं आता (3)
19. अचरज करने में धोबी है (3)
21. 100 (2)
22. जमावन डालकर जमाया गया दूध (2)

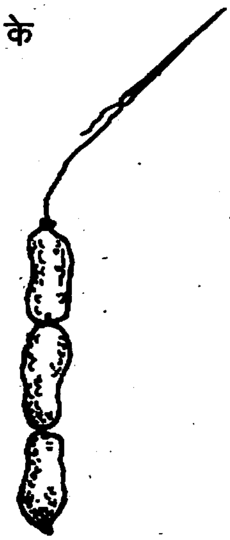
यह पहेली मेघनाथ बहिदार, तमनार, रायगढ़, म. प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली के आधार पर तैयार की गई है।

वर्ग पहेली – 83 का हल अगस्त, 1998 के अंक में देखें। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अगस्त, 1998 अंक उपहार में भेजा जाएगा।

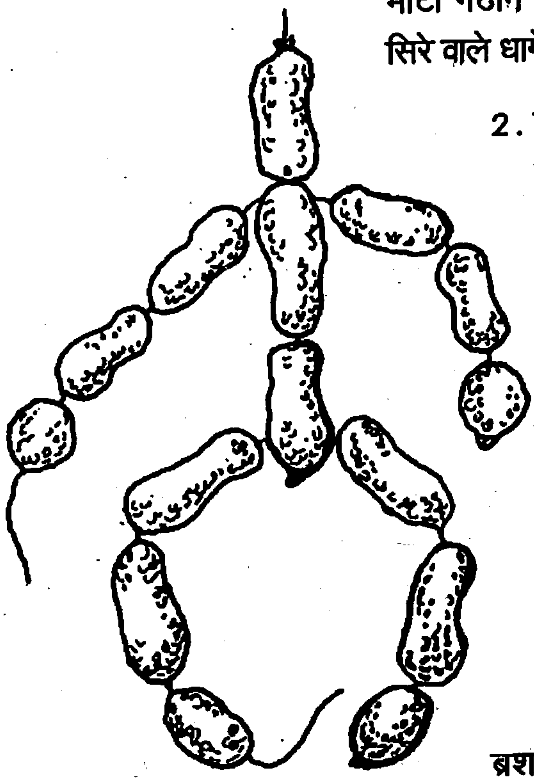
मूँगफली की कठपुतली

जी हाँ मूँगफली खाना तो हम सबको अच्छा लगता है। पर क्या तुम इससे कठपुतली बनाना चाहोगे? तो जुटाओ कुछ सामान। तुम्हें लगेंगी लगभग 15 साबुत मूँगफलियाँ (दाने नहीं, पूरी फलियाँ), आइसक्रीम की लम्बी वाली 4-5 लकड़ियाँ, सुई-धागा, रंग, ब्रश, रूई या ऊन और चिपकाने के लिए लेई या फेविकॉल।

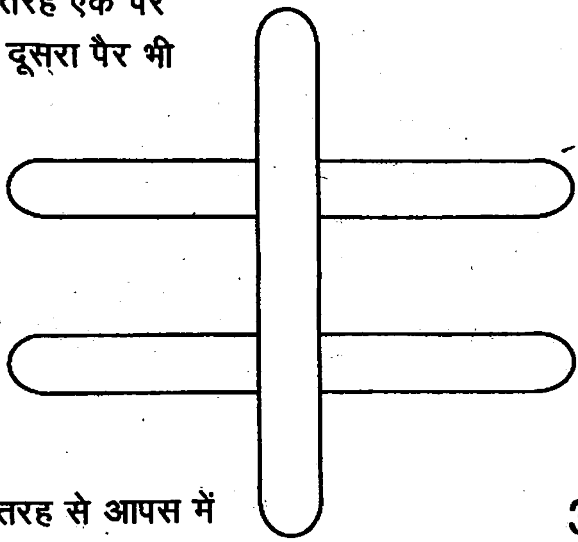
1. कठपुतली के सर व धड़ के लिए तीन लम्बी मूँगफली को सुई-धागे में पिरोओ। देखो चित्र में दिखाया है कैसे। इन तीन मूँगफलियों के नीचे और ऊपर मोटी-मोटी गठानें लगा दो ताकि मूँगफली बाहर न निकलें। सिर के सिरे वाले धागे को लम्बा छोड़ दो।



2. हाथ और पैर के लिए तीन-तीन मूँगफलियाँ लो। इनमें दो बड़ी हों और एक छोटी। इन्हें भी पहले की तरह सुई-धागे में पिरोना है। पहले छोटी मूँगफली, फिर दो बड़ी। अब एक हाथ को कठपुतली के धड़ में पिरोकर दूसरी तरफ सुई निकालकर दूसरा हाथ बनाओ। इसी तरह एक पैर लगाकर फिर दूसरा पैर भी बनाना है।



3. रंग और ब्रश की मदद से कठपुतली का मुँह, आँखें, नाक आदि बनाओ। टोपी के लिए धागे या ऊन से फुँदना-सा बना लो या रूई का गोला बनाकर सिर वाली फली पर चिपका दो।

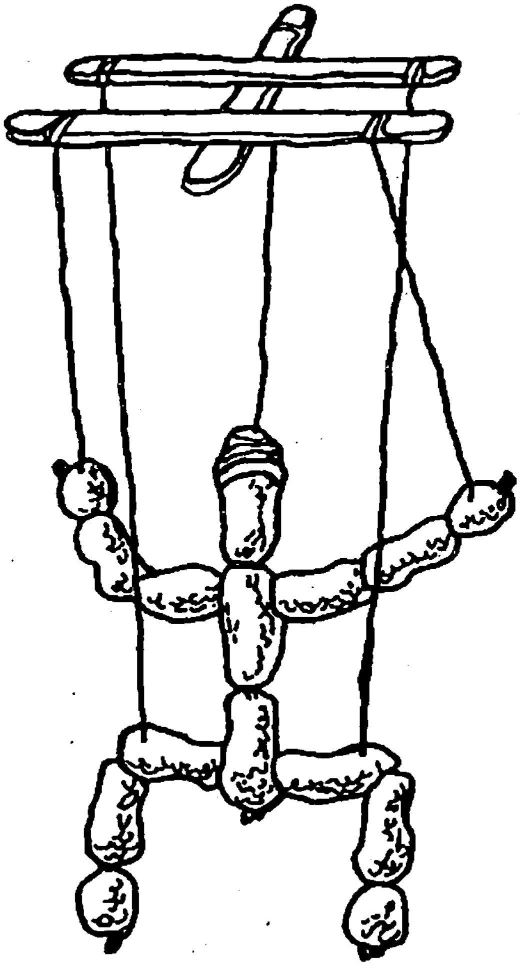


4. तीन आइसक्रीम की लकड़ियाँ लेकर उन्हें चित्र की तरह से आपस में

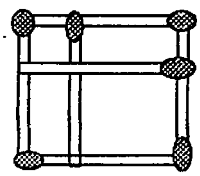
चिपकाओ। दो लकड़ियाँ आड़ी रहेंगी और एक खड़ी।

5. मूँगफली की कठपुतली में से निकले धागों को चित्र देखकर आइसक्रीम की लकड़ियों से बाँधो। यह काम ध्यान से करना पड़ेगा ताकि सही धागा सही लकड़ी से बँधे। हाथ से निकले धागों को आगे वाली आड़ी लकड़ी से और पैर वाले धागों को पीछे की आड़ी वाली लकड़ी से बाँधो। सिर वाले धागे को बीच की खड़ी लकड़ी के पिछले (चित्र में सबसे दूर वाले) सिरे से बाँध दो।

6. आइसक्रीम की लकड़ी को एक हाथ से पकड़ो और धागों को दूसरे हाथ से नचाओ। शुरू-शुरू में तुम्हारी कठपुतली के हाल-चाल ज़रा डगमगाएँगे पर थोड़े अभ्यास के बाद तुम ज़रूर बहुत अच्छी तरह से उसे नचा पाओगे।



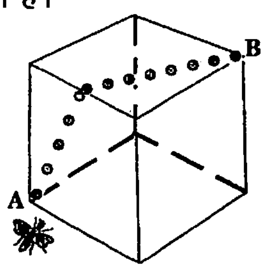
माथापच्ची : हल अप्रैल, 1998 अंक के

1. 

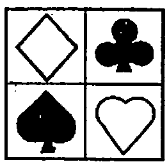
3. 20 त्रिभुज हैं।

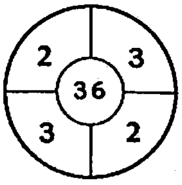
4. दोनों दोस्तों की गिनती बराबर रहेगी।

5. मक्खी के लिए सबसे छोटा रास्ता चित्र में बिन्दु रेखा से दिखाया गया है।



6. (1) हाथी के दाँत, खाने के और दिखाने के और।
(2) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
(3) टेढ़ी उंगली से घी निकालना।
(4) एक तीर से दो निशाने लगाना।
(5) काल करे सो आज कर आज करे सो अब।

7. 

8. 

आपस की बात . . .

चकमक को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए पिछले साल हमने आजीवन सदस्यता की योजना की शुरुआत की थी। अब तक जिन लोगों /संस्थाओं ने आजीवन सदस्य बनकर इस मुहिम को आगे बढ़ाया है, वे हैं –

1. श्री हरित नीरव डॉक्टर, सूरत, गुजरात
2. श्री ओम थानवी, चण्डीगढ़
3. सुश्री रुक्मिणी जोशी, उज्जैन, म. प्र.
4. श्री राज सिंह, पिलानी, राजस्थान
5. डॉ. मदन एम. बजाज, दिल्ली
6. सुश्री शिवानी चन्दू, नई दिल्ली
7. डॉ. अजय जन्मेजय, बिजनौर, उ. प्र.
8. श्री मुदित राजोरिया, भोपाल, म. प्र.
9. श्री धनंजय पिंपलखूटे, भोपाल, म. प्र.
10. सुश्री अर्पिता शाह, भोपाल, म. प्र.
11. श्री विजय कुमार मेहता, उज्जैन, म. प्र.
12. श्री अरविन्द पी. गुप्ते, इन्दौर, म. प्र.
13. सुश्री चारुस्मिता गाडेकर, वेडछी, सूरत, गुजरात
14. पुस्तकालय, राजकमल पब्लिक स्कूल, भोपाल, म. प्र.
15. श्री आशुतोष वसन्त वडवले, वेडछी, सूरत, गुजरात
16. उत्थान सेवा संस्थान, अहमदाबाद, गुजरात
17. सुश्री शाना बी. हेडॉक, चण्डीगढ़
18. सुश्री स्नेहा बत्रा, कलकत्ता, प. बंगाल
19. श्री गुलज़ार, मुम्बई, महाराष्ट्र
20. श्री संजीव के. पुरोहित, सम्बलपुर, उड़ीसा
21. रूरल साइंस एक्सटेंशन सेंटर, वेडछी, सूरत, गुजरात
22. सुश्री सुजाता एस. पटेल, अहमदाबाद, गुजरात
23. सुश्री आशा नवांगुल, कोल्हापुर, महाराष्ट्र
24. ट्रायबल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेंटर, चाइबासा, बिहार
25. श्री सदाशिव पांचाल, इन्दौर, म. प्र.
26. श्री प्रताप कुमार अग्रवाल, चण्डीगढ़
27. डॉ. सुश्री टी. एल. वर्मा, दिल्ली
28. सुश्री गिरिजा कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर, म. प्र.
29. डॉ. भरत पूरे, इन्दौर, म. प्र.
30. प्रो. यशपाल, गज़ियाबाद, उ. प्र.
31. श्री कुसुमाकर दामले, सोलापुर, महाराष्ट्र
32. पुस्तकालय, श्री सनातन धर्म उच्च. मा. विद्यालय, नई दिल्ली
33. सुश्री सम्पूर्णा बिस्वास, नई दिल्ली
34. सुश्री ग्लोरिया जॉर्ज, इन्दौर, म. प्र.
35. श्री एस. महाजन, दिल्ली
36. श्री अंकित सक्सेना, दिल्ली
37. श्री मोहित कपूर, दिल्ली
38. श्री जय देव आनंद, दिल्ली
39. डॉ. एस. एस. वेलंकर, इन्दौर
40. संगठक सचिव, विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर, राजस्थान
41. विद्या भवन जी. एस. टी. टी. कॉलेज, उदयपुर, राजस्थान
42. प्राचार्य, विद्या भवन माध्य. स्कूल, झमारकोटड़ा, राजस्थान
43. प्राचार्य, विद्या भवन बेसिक स्कूल, रामगिरि,राजस्थान
44. प्राचार्य, विद्या भवन माध्य. स्कूल, झमारकोटड़ा, राजस्थान
45. प्राचार्या, विद्या भवन उ. मा. स्कूल, उदयपुर, राजस्थान
46. निदेशक, विद्या भवन कला संस्थान, उदयपुर, राजस्थान
47. निदेशक, विद्या भवन उ. मा. स्कूल, उदयपुर, राजस्थान

आप भी स्वयं आजीवन सदस्य बनकर या अपने दोस्तों को भी बनाकर चकमक को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं।

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन [| | | | |]

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह	:	40.00 रुपए
एक साल	:	75.00 रुपए
दो साल	:	140.00 रुपए
तीन साल	:	200.00 रुपए
आजीवन	:	750.00 रुपए *
आजीवन	:	1000.00 रुपए ०

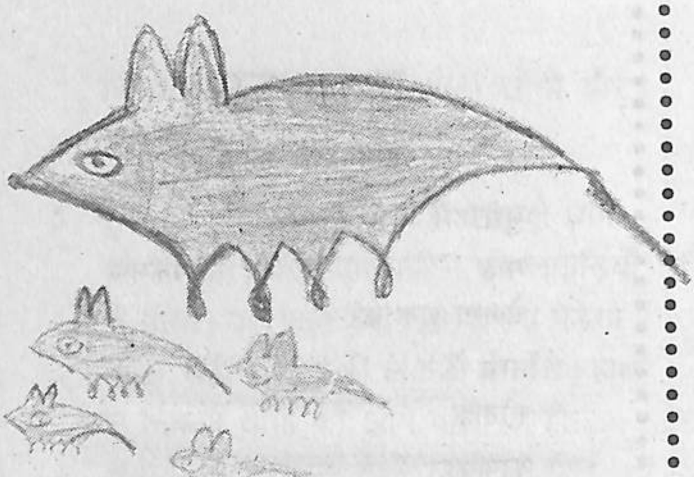
* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

० इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

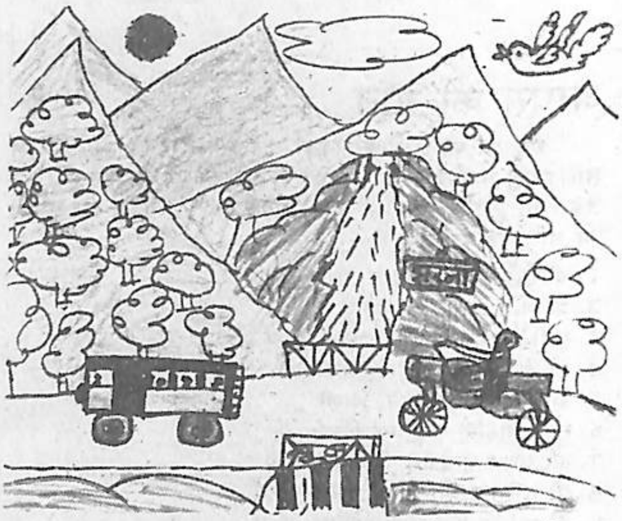
सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।



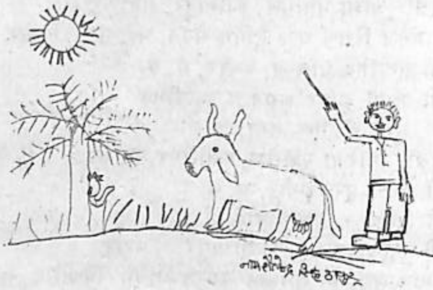
अनीता मीना, आठवीं, भोपाल, म.प्र.



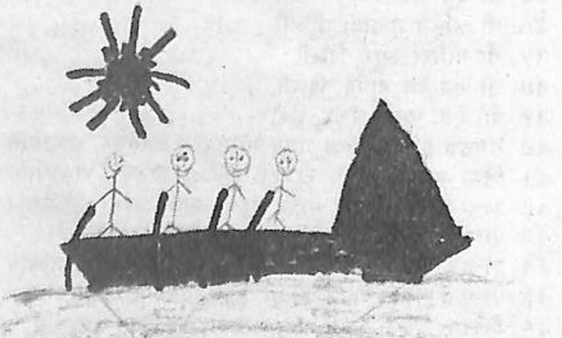
आशीष साहू, नवमीं, कुरूद, दुर्ग, म.प्र.



शुभम काशिव, पाँचवीं, साँवेर, म.प्र.



शैलेन्द्र सिंह ठाकुर, परासरी, दतिया, म.प्र.



के. आरती, आठ वर्ष, लोयाबाद, धनबाद, बिहार

यहाँ से काट लें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

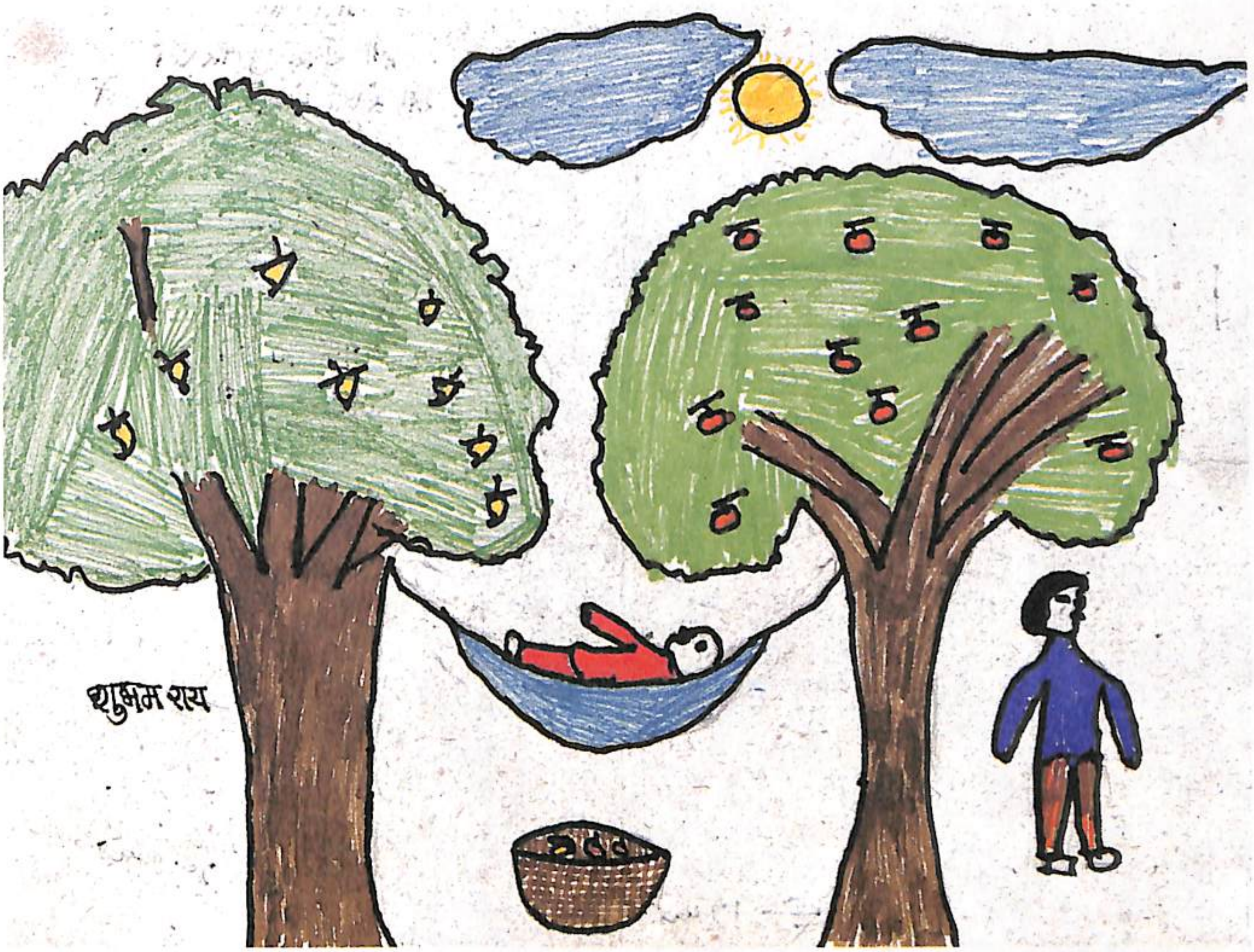
डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

....

....

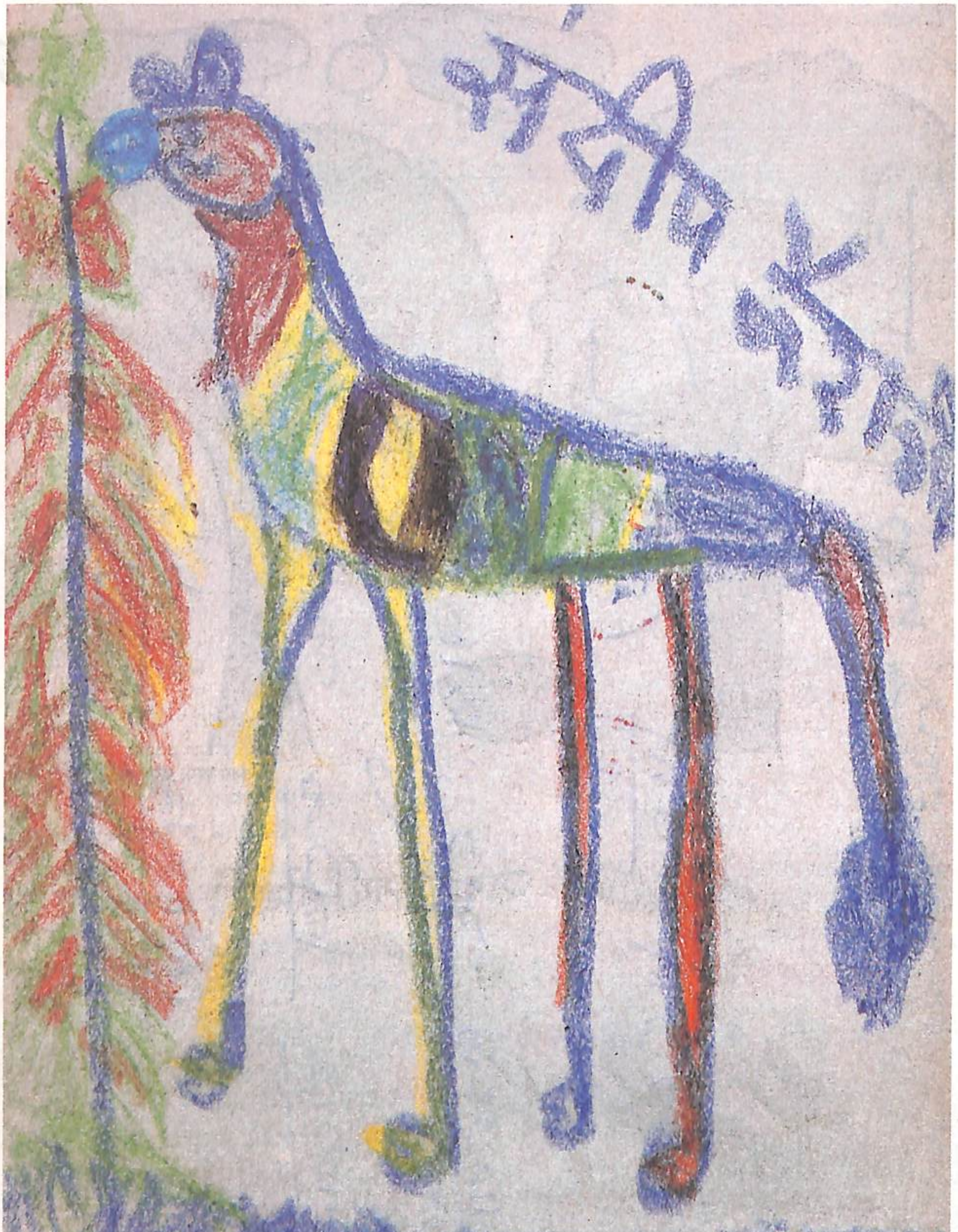


शुभम राय, दस वर्ष, टिमरनी, म.प्र.



राधा कुमारी, तीसरी, शाहपुरडांग, भरतपुर, राजस्थान

 पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत।   डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/98



संदीप बैरागी, सतवास, देवास, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना